Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 01 30 जनवरी, 2022 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

शिखर पुरुष चौधरी छोटूराम

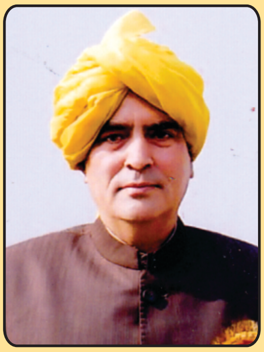

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

भारत की राजनीति में बहुत से शिखर पुरुष हुए हैं, जिन्होंने न केवल देश में बल्कि विदेशों तक अपनी छाप छोड़ी और विशेष पहचान भी बनाई। इनमें चौधरी छोटूराम एक विशेष शख्शीयत थे जिनके नाम के साथ चौधरी, सर, रायबहादुर, दीनबंधु, रहबरे आजम और किसान मसीहा जैसे सम्मानजनक शब्द जुड़ते रहे। वे 1917 में रोहतक जिला कांग्रेस के प्रधान बने थे और तीन साल में ही राजनीति को इतना समझ गए कि अपनी राजनीति की नई राह बना ली। चौधरी छोटूराम की जीवनी लेखक रघुबीर सिंह शास्त्री के अनुसार, उस समय हालात बहुत खराब थे, खेती का एकमात्र आधार बैल, वर्षा और कच्चे कुएं थे। उस समय बड़े–बड़े कृषि फार्म थोड़े ही होते थे और ना ही रुई, कपडे और चीनी की मिलें होती थी। चरखा, करघा, रहंटी कपड़ों के उत्पादक होते थे। पत्थर, लकडी और कोल्हू, गुड़ और तेल के प्रेरक थे। कर्ज लेने के लिए न तो सहकारी समितियां थीं और ना ही केंद्रीय, प्रादेशिक अथवा स्थानीय बैंक। उस समय सबसे छोटा सिक्का दमडी और सबसे बडा कलदार होता था। इसी को आजकल रुपया कहते हैं। सोने का सिक्का तो राजा महाराजाओं की ही शान होता था और अशरफी कहलाता था। हुंडिया बडे बडे सेठों के चलती थी। प्राय हरियाणा समेत पूरे भारत की यही हालत तब थी। अर्थ तंत्र का सारा चक्र साहूकारा करने वाले महाजनों के चारों और घूमता था।

विख्यात पत्रकार डॉ. सतीश त्यागी के अनुसार तब की सामाजिक स्थिति ऐसी होती थी कि छूआछात और जाति पाति का बोलबाला था। एक पीढी का कर्ज लगातार कई पीढ़ियों तक चलता रहता था। मरने वाला अपने बेटे पोतों से कहकर जाता था कि मेरा कर्ज चुका देना वरना लाला वहां वसूल करेगा। आपस में मुक्कदमेबाजी के अलावा शादी ब्याह और श्राद्ध के खर्चे कर्ज की ही राह खोलते थे। सौ घर की बस्ती में केवल तराजू बाट लेकर नया आबाद होने वाला वणिक दस वर्ष में ही बोहरा, महाजन और साहूकार बन जाता था। गांधी, चौधरी, पटेलगिरी और नेतापन उसके इर्दगिर्द घूमते थे। कुछ इस तरह की परिस्थितियों और हालात में जन्म लिया था एक महापुरुष ने और जो देखते ही देखते गरीब गुरबे किसानों का मसीहा बन गए। उनका जन्म 24 नवंबर, 1881 में रोहतक, हरियाणा के एक छोटे से गांव गढ़ी सांपला में बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने ब्रिटिश शासन में किसानों के अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करने के लिए जाना जाता था। वे पंजाब प्रांत के सम्मानित नेताओं में से थे और उन्होंने 1937 के प्रांतीय विधानसभा चुनावों के बाद अपने विकास मंत्री के रूप में कार्य किया। उनका असली नाम रिछपाल था और वो घर में सबसे छोटे थे, इसलिए उनका नाम छोटू राम पड़ गया। उन्होंने अपने गांव से पढ़ाई करने के बाद दिल्ली में स्कूली शिक्षा ली और सेंट स्टीफंस कॉलेज से ग्रेजुएशन पूरा किया, साथ ही अखबार में काम करने से लेकर वकालत भी की। सर छोटूराम बहुत ही साधारण जीवन जीते थे और वे अपनी सैलरी का एक बड़ा हिस्सा रोहतक के एक स्कूल को दान कर दिया करते थे। वकालत करने के साथ ही उन्होंने 1912 में जाट सभा का गठन किया और प्रथम विश्व युद्ध में उन्होंने रोहतक के 22 हजार से ज्यादा सैनिकों को सेना में भर्ती करवाया। उस समय का लोकगीत "भर्ती होजा रे रंगरूट, यहां तो पहने टूटे जूते, वहां मिलेगें बूंट" काफी लोकप्रिय हुआ।

1916 में जब रोहतक में कांग्रेस कमेटी का गठन हुआ तो वो इसके अध्यक्ष बने लेकिन बाद में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से असहमत होकर इससे अलग हो गए। उनका कहना था कि इसमें किसानों का फायदा नहीं था। उन्होंने यूनियनिस्ट पार्टी का गठन किया और 1937 के प्रोवेंशियल असेंबली चुनावों में उनकी पार्टी को जीत मिली थी और वो विकास व राजस्व मंत्री बने। छोटूराम को साल 1930 में दो महत्वपूर्ण कानून पास कराने का श्रेय दिया जाता है। इन कानूनों के चलते किसानों को साहूकारों के शोषण से मुक्ति मिली। ये कानून थे पंजाब रिलीफ इंडेब्टनेस, 1934 और द पंजाब डेब्टर्स प्रोटेक्शन एक्ट, 1936 इन कानूनों में कर्ज का निपटारा किए जाने,

शेष पेज–2 पर

सूचना

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला की ओर कोविड़ महामारी आने के कारण बंसतपंचमी समारोह को रद्द कर दिया गया है। जिसका हमें बहुत खेद है।

डा. महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

शेष पेज–1

उसके ब्याज और किसानों के मूलभूत अधिकारों से जुड़े हुए प्रावधान थे।

स्वाभिमान उनमें बचपन से ही था। सैंट स्टीफन स्कूल (दिल्ली) के हॉस्टल में करीब 24 देहाती परिवेश के बच्चे रहते थे। हरियाणा(उस समय पंजाब) के गढ़ी सांपला गांव के किसान के बेटे को इन बच्चों का मॉनिटर बनाया गया। होस्टल का सफाई कर्मचारी हॉस्टल की सफाई के बजाए अधीक्षक (पंडित जानकी नाथ) के घर पर काम करता रहता था और होस्टल में देहाती परिवेश के छात्रों को जरूरी सुविधाओं से वंचित रखा गया था। उन्होंने यह बात प्रिंसिपल के संज्ञान में लाई और सभी सहपाठियों से इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने को कहा। सभी विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी जो पंद्रह दिन तक चली। हड़ताल से विवश होकर प्रिंसिपल केली (Kelly) ने सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाई और सफाई कर्मचारी को निर्देश दिया कि वह मॉनिटर की आज्ञा का पालन करे। उसके ऐसे साहस के कारण उनके सहपाठी उन्हें "जनरल रॉबर्ट" कह कर बुलाते थे। उस जनरल रॉबर्ट का नाम था चौधरी छोटूराम।

चौधरी छोटूराम को आगे बढता देख कुछ वर्ग तो बिल्कुल जलेभुने बैठे थे और उन पर तरह तरह के आरोप भी लगाते थे। कोई उन्हें घोर साम्प्रदायिक बताता तो कोई कुछ। पर उनका कहना बड़ा साफ था कि "मैं सांप्रदायिक नहीं हूँ, न मैं हिन्दू के हक के लिए और न मुस्लिम के हक के लिए लड़ रहा हूँ, मैं लड़ रहा हूँ सिर्फ किसान, मजलूम, पिछड़ों के हक के लिए। मेरा पंथ सामान्य धर्मनिरपेक्ष और आर्थिक आधार पर टिका है। साल 1939, एक जनसभा का संबोधित करते हुए चौधरी छोटूराम ने कहा था कि "इस देश में नो करोड़ मुस्लिम हैं, यह नामुमकिन है कि हिंदू उन्हें इस देश से बाहर निकाल दें, या मुस्लिम हिंदूओं को खत्म कर दें। इसलिए आपसी नफरत को भुला कर, हमें भाईचारे की मिसाल देते हुए मिलकर देश की आजादी व आर्थिक समृधि के लिए काम करना चाहिए।

असल में चौधरी छोटूराम एक बहुत दूरदर्शी व सच्चे राष्ट्रवादी हस्ती थे। उन्होंने पंजाब के हर तबके के उत्थान के लिए काम किया था और कानून बनाए थे। पंजाब में दलित तबके के सामाजिक उत्थान के लिए छुआछात कानून बनाया। हिसार के मोठ गाँव में जाट व रांगड़ो ने चमारों को कुँए से पानी भरने से मना कर दिया जिसके लिए वह खुद मोठ गाँव गए और वहां जाटों व रांगड़ो को समझाया और खुद कुँए से पानी भरवा कर दलित के सर पर घड़ा रखा। मजलूमों–मजदूरों के लिए उन्होंने कई कानून बनाए। कानून बना कर बेगार खत्म की, कार्य के घंटे तय किये, न्यूनतम भत्ता तय किया। पंजाब में मजलूम भूमिहीनों को मुलतान–निलिबार में कृषि भूमि अलोट कर उन्हें जमींदार बनाया। पूरे देश में यह पहला ऐसा वाक्या था जहाँ भूमिहीनों को कृषि भूमि अलोट की गई थी। अछूतों को शिक्षा संस्थानों व नौकरियों में आरक्षण व वजीफों का प्रावधान किया।

उनके जीवन पर बारिकी से अध्ययन करने वाले राकेश सांगवान का कहना है कि पंजाबियों की आर्थिक हालातों में सुधार का जो सबसे पहला प्रयास उन्होंने किया वह था पंजाबियों को फौज में भर्ती का आह्वान। उनके इस प्रयास का असर यह हुआ कि देहात के जो पंजाबी फौज में भर्ती हुए उससे सालाना 4–5 करोड़ की आमदनी बढ़ी जोकि उस वक्त पंजाब के लैंड–रेवेनु के बराबर थी। कृषि व किसानों के हालातों के सुधार के अनेक कानून बनाए। कृषि सिंचाई के लिए कई परियोजनाएं शुरू की। 1927 में सदन में थल परियोजना का प्रस्ताव रखा। खरीफ नहरें विस्तार योजना (1940), हवेली परियोजना 1939, दो गैर बारहमासी नहरें, हिसार व रोहतक जिलों के लिए (1941 –42), पश्चिमी पंजाब में सिंचाई की संभावनाएं देखने के लिए 1943–44 में एक डिविजन का गठन किया। साल 1943 में गुडगाँव जिले में बंद सिंचाई को पुनर्जीवित किया, नई योजना, टयूबवेल सिंचाई व लिफ्ट सिंचाई सिस्टम, पश्चिमी युमना नहर से सिंचाई। साल 1944 में सिंध व बिलासपुर सरकारों से सभी बाधाएं दूर कर 8 जनवरी 1945 यानि ठीक उनके निर्वाण दिवस से एक रात पहले भाखड़ा बाँध परियोजना की फाइल पर अपने दस्तखत किये। पर ये अफसोस है कि भाखड़ा बाँध पर उनका न कोई नाम न कोई उन्हें याद करता है। राकेश सांगवान बताते हैं कि 1938 में चौधरी छोटूराम ने केंद्र सरकार को सुझाव दिया कि विदेशी मुल्कों के साथ प्रतिस्पर्धा कम करने के लिए, पंजाबी औधोगिक प्रगति के हित में, औद्योगिक और उपभोगताओं को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए। पंजाब में कुटीर व छोटे उद्योगों के लिए व्यापक योजना बनाने के लिए उन्होंने उस जमाने के जानेमाने अर्थशास्त्री के.टी.शाह को इसका जिम्मा दिया। पंजाब में उद्योगों के विकास के लिए 1938–39 में उन्होंने कुछ लोग विदेशों में ट्रेनिंग के लिए भेजे, इसके लिए 10000 का बजट रखा। पंजाब में 'इंडस्ट्रियल रिसर्च फण्ड'

गठन किया, जोकि पूरे देश में यह पहली पहल थी, इसके लिए 150000 रुपये का अलग से फंड का प्रबंध किया।

चौधरी छोटूराम की उद्योग नीतियों व प्रयासों की उस दौर में खूब सराहना हुई। सिविल एंड मिलिट्री गजट ने लिखा था कि 'यह भारत के आधुनिक आर्थिक इतिहास में अग्रणी उपाय हैं'। उड़ीसा के प्रीमियर श्री बिस्वा नाथ ने दिसम्बर 1937, द–ट्रिब्यून अखबार को एक व्यक्तय दिया था कि औद्योगिक विकास में पंजाब उन प्रान्तों से भी आगे निकल गया है जिनमें कांग्रेस की सरकार है। ऐसा ही व्यक्तय बॉम्बे के उद्योग मंत्री श्री एल.एम.पाटिल ने दिया था कि पंजाब की यूनियनिस्ट सरकार ने इस दिशा में सराहनीय व उल्लेखनीय काम किया है। जब हम आगरा से आगे निकलते हैं तो चौधरी छोटूराम द्वारा उस दौर में संयुक्त पंजाब में रखी विकास की बुनियाद का अंदाजा हो जाता है। आज भी आगरा से आगे और हरियाणा–पंजाब के कृषि और किसान के हालात में फर्क खुद ही सब बयान करते हैं। चौधरी छोटूराम भ्रष्टाचार व शोषण को लेकर बड़े सख्त थे। इसके लिए उन्होंने जाट गजट व 'द–ट्रिब्यून' ठगी बाजार की सैर और बेचारा जमींदार नाम से धारावाहिक लेख निकाले थे।

असल में चौधरी छोटूराम की कमी आज सही में खल रही है। ज्यों ज्यों समय बीत रहा है उनकी बातें और सोच प्रासंगिक होती जाती है। आज किसान पीसता जा रहा है, कर्ज के दुश्चक्र में फंसा बैठा है और फसलों के दाम भी नहीं मिल पा रहे हैं लेकिन इसके बावजूद पूरा देश आज एक किसान नेता को देखने के लिए तरस रहा है। वो पाखंड के सख्त खिलाफ थे लेकिन आज युवा वर्ग ही पाखंड में धंसता जा रहा है। वो युवाओं को शिक्षा के हिमायती थे लेकिन आज शिक्षा दिन प्रतिदिन महंगी होती जा रही है। ऐसे में अगर सर छोटूराम आज हम सबके बीच होते तो ललकार–ललकार कर हमें जिंदा होने का सबूत देने की मांग करते। अगर हम सच में ही चौधरी छोटूराम को नमन करना चाहते हैं तो उनके बताए रास्ते पर चलना होगा और अपने हक के लिए बोलना सीखना होगा। केंद्रीय सरकार से भाखड़ा नंगल डैम पर उनके नाम की प्रतिमा स्थापित करने और पंजाब विश्वविद्यालय में चौधरी छोटूराम चेयर स्थापित करने की पुरजोर आग्रह करना होगा ताकि कृषि विकास में आवश्यकता अनुसार संशोधन करके किसान, कामगार, काश्तकार के कल्याण हेतू स्थाई नीति बनाई जा सके।

डॉ० महेंद्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

जाट क्षत्राणी महारानी तोमरिस दहिया

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
हरियाणा वन सेवा (सेवानिवृत)

फारस/मांडा देश के शासक साईरस ने बल्ख तथा कैस्पियन सागर पर शासक जाटों से कई बार युद्ध किए लेकिन वह असफल रहा। बल्ख पर कांग/कंग जाटों का शासन था और मैस्सागेटाई पर दहिया शासकों का साम्राज्य था। ये दोनों स्वतन्त्र राज्य थे।

मैस्सागेटाई जाटों का एक छोटा लेकिन काफी शक्तिशाली राज्य था। वह सिपिया देश का ही एक प्रान्त था। इस प्रान्त के शासक का नाम राजा अरमोघ दहिया था। जिसकी महारानी का नाम तोमरिस दहिया था। राजा अरमोघ दहिया की मृत्यु होने पर शासन की बागडोर महारानी तोमरिस ने संभाली थी। जब मांडा सम्राट साईरस ने उचित अवसर समझकर अपने दूत द्वारा महारानी तोमरिस के पास अपने साथ उसके विवाह का प्रस्ताव भेजा। महारानी ने साईरिस का प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए उत्तर दिया कि मैं जाट क्षत्राशी हूं और अपना धर्म नहीं छोड़ सकती व अपने देश को तुम्हारे अधीन नहीं करूंगी। यह उत्तर मिलने पर मांडा सम्राट साईरस ने 529 ई. पूर्व में भारी सेना के साथ तोमरिस के राज्य पर हमला कर दिया। उसकी सेनाये अरेक्सिज नदी पर पहुंच गई जहां उन्होंने नदी को पार करने के उदेश्य से नावों का पुल बांधा। यह सुचना मिलने पर तोमरिस ने साईरस को सन्देश भेजा "फारस/मांडा देश के प्रधान, इस युद्ध का परिणाम अनिश्चित है।"

हम आपको आपका वर्तमन इरादा छोडने की सलाह देते हैं। आप अपने ही राज्य में संतुष्ट रहिए और हमें हमारा शासन करने दिजिए। लेकिन आप इस शान्तिप्रिय कल्याणकारी सलाह को नहीं मानेंगे। आप फिर भी यदि मैस्सागेटाई से युद्ध लड़ने के इच्छुक है तो पुल बनाने का कार्य छोड दो। हम अपने राज्य में 3 दिन पिछे की ओर चल कर पीछे हट जाते

है और आप नदी पार करके आसानी से हमारे राज्य में प्रवेश कर जाएंगे या यदि आप अपने ही क्षेत्र में हमसे भिड़ना चाहते है तो आप पीछे हट जाईये, हम आगे बढ़ जाएंगे।

साईरस ने अपने सभासदों की सलाह से आगे बढ़ना तय किया और सुचना महारानी तोमरिस को भेज दी। महारानी अपने पत्र के अनुसार पीछे हट गई। परन्तु साईरस ने युद्ध विघा का प्रयोग किया और शराब तथा अच्छा भोजन एक कैम्प में रखवा दिया और शेष शक्तिशाली सेना नदी की ओर पीछे तैनात कर दी। साईरस का यह उद्देश्य था कि जाट सेना आगे बढ़कर मेरी दुर्बल सेना को हरा कर शराब व स्वादिष्ट भोजन खा पीकर रात को गहरी नींद में सो जाएंगे।

तब उन पर मेरी शक्तिशाली सेना हमला करके उन्हें हरा देगी। साईरस का यह उपाय काफी हद तक सफल रहा। तोमरिस की जाट सेना ने हमला करके दुर्बल सेना को मार दिया और शराब व स्वादिष्ट भोजन पर टूट पड़े और खा पीकर सो गए। उसी समय प्रशियन सेना ने उन पर हमला कर दिया। मैस्सागेटाई सेना काफी संख्या में मारी गई और कुछ कैद कर ली गई। महारानी का पुत्र भी कैद कर लिया गया जोकि शराब के नशे में चूर था। उसका नाम सपरगपिसिस था। जब सपरगपिसिस होश में आया तो अपने को कैदी पाकर शर्मिन्दा हुआ। ज्योंहि महारानी तोमरिस ने अपनी पराजय की सुचना मिली तो दूसरा संदेश साईरस को भेजा। "साईरस तुम खून बहाने के लिए इच्छुक हो किन्तु अपनी वर्तमान सफलता पर गर्व न करो। जब तुम शराब के नशे में होते हो तो क्या–क्या मुर्खता नहीं करते। शराब के नशे में होकर तुम अभद्र भाषा का प्रयोग करते हो। इस विष के कारण तुमने मेरे पुत्र को जीत लिया अपनी वीरता से नहीं। मैं तुम्हें दोबारा यह सुझाव देने का साहस रखती हूं कि तुम मेरे पुत्र को आजाद कर दो। तुम इस सलाह को मानने में रूचि लोगे और मैस्सागेटाई पर कब्जे वाले भाग को स्वतंत्र कर दोगे और अपने ही राज्य में सन्तुष्ट रहोंगे। यदि तुम मेरे राज्य के जीते हुए भाग पर से कब्जा नहीं छोडोंगे तो मैं मैस्सागेटाईयों के महान देवता सूर्य की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि जैसे तुम खून के प्यासे हो मैं तुम्हें ही तुम्हारा खून पिला दूंगी।

महारानी के इस संदेश का साईरिस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और निराश होकर महारानी ने अपनी सारी सेना दोबारा से संगठित कर ली। फिर से भंयकर युद्ध हुआ दोनों तरफ वीर जाट सैनिक थे जो आखरी सांस तक लड़े। प्रसिद्ध इतिहासकार हैरोडोटस लिखता है कि प्राचीनकाल में लडी गई सभी लड़ाईयों में से एक बड़े खून खराबे वाली लड़ाई थी। महारानी तोमरिस की सेना ने 529 ई. पूर्व इस लड़ाई में जीत हासिल की। महारानी ने साईरिस के शव की खोज करवा कर उसका सिर काटकर एक तसले में खून इक्कट्ठा करके अपनी प्रतिज्ञा अनुसार साईरस को उसका ही खून पिला दिया। महारानी तोमरिस इस युद्ध में स्वयं अग्रिम पंक्ति में होकर युद्ध लड़ी थी। मैस्सागेटाई के महान जाटों के हाथें अजेय साईरस की यह पहली हार थी। जिसमें साईरस मारा गया था।

सोग्डियाना के जाटों ने भी ऐसी ही करारी हार सिकन्दर को दी थी। इसके फलस्वरूप मांडा एवं फारस साम्राज्य की उत्तरी सीमा अरेक्सिस नदी तक निर्धारित की गई और जाट क्षत्राणी महारानी तोमरिस अपने ही राज्य तक सन्तुष्ट रही। यदि वह चाहती तो मांडा राज्य को भी अपने साम्राज्य में मिला लेती लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और मांडा का राजा साईरस के बेटे को ही बना दिया। इससे महारानी तोमरिस का सिर और भी ऊंचा हो गया। चारों और जाट क्षत्राणी महारानी तोमरिस दहिया की जय–जयकार होने लगी। साईरस की सेना व उसके सेनापति भी जाट ही थे। प्रायः प्राचीन इतिहास में यह देखा गया है कि चारों ओर सांसारिक युद्धों में केवल जाट ही आपस में लड़ते रहे है। जिसके फलस्वरूप आज भी यह कौम आपस में ही लड़ रही है। जिसका लाभ अन्य पक्ष उठा रहे हैं। मेरा ये मानना है कि जब तक हम आपस में लड़ते रहेंगे तब तक दूसरों को इसका फायदा ही मिलेगा और हम घाटे में ही जाएंगे। इसलिए कुछ पाने के लिए आपसी लड़ाई खत्म करनी जरूरी है।

जय जवान जय किसान और जय भारत।

मेरी दक्षिणी गुजरात - यात्रा

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

वैसे तुम मेरे लिए गुजरात कोई नया स्थान नहीं है क्योंकि मैं 1984–85 ईस्वी में भी 1 वर्ष उधर टंकारा (राजकोट) में यहां महाविद्यालय में अध्यापन कार्य कर चुका हूं। लेकिन तब मैं केवल सौराष्ट्र और कच्छ–भुज तक ही घूम पाया था इस बार 7 जुलाई से लेकर 17 जुलाई तक की 5 दिवसीययात्रा मेरी विशेष ही थी। कारण, इस बार मैंने बजाय सौराष्ट्र या उत्तरी–पश्चिमी गुजरात के दक्षिणी गुजरात के तीन जिलों सूरत नवासारी एवं बलसाड को ही चुना था हालांकि इस बार मेरा प्रयोजन कोई आर्थिक या व्यावसायिक न होकर विशुद्ध समाजिक ही था। क्योंकि मैंने वहीं के एक परिवार में अपने सुपुत्र अभिनव का विवाह–संबंध स्थापित करने के लिए वौली–मोरा (बलसाड) की लड़की देखने का ही कार्यक्रम बनाया था। मेरी यह यात्रा सूरत–संभाग तक ही सीमित थी

इसलिए मैं और मेरा कनिष्ठ पुत्र 'राजधानी–एक्सप्रेस' ट्रेन से 7 जुलाई को सायंकाल 5:15 बजे बलसाड के लिए सवार हुए थे। दिन छिपने से पूर्व ही हम मथुरा जंक्शन से पश्चिम की ओर मुड़कर वीरभूमि भरतपुर और ब्याना से बैर तथा हिडौन स्टेशनों से गुजरते हुए लगभग 8:00 बजे तक सवाईं माधोपुर के राजस्थानी स्टेशन पर पहुंच चुके थे। हमारी गाड़ी ने मथुरा से चलकर वहीं पर कुछ ही मिनटों के लिए विराम लिया था। वहीं पर हमनें राजस्थानी चाय का भी आनंद लिया था। वह स्थान कभी जयपुर स्टेट की सीमा में ही आता था। वहीं एक शासक दिन श्री माधोसिंह (सवाई) के नाम पर यह नगर बसाया गया था

भरतपुर से लेकर बेर बयाना से करौली और हरियाणा के रेवाड़ी नारनौल तक का यह क्षेत्र कभी वादा नाक प्रदेश ही कहलाता था जिसको मध्य प्रदेश सियालकोट पंजाब से उजड़ कर यहां तक बसने वाले भरदक से बिगड़ कर भरदक या भादू जाट कहलाने वाले लोगों ने ही पूर्व मध्यकाल तक बसाया था यहीं पर कभी उड़ीसा से गुजर कर आए हुए यादव ब्रैकेट में जाटों ठाकुर एवं भरतपुर वह करौली के राजवंश यहां आकर बसे थे तब बयाना का नाम ही श्रीपत था जो कि महाराज विजयपाल की राजधानी थी जिसको 10 वीं शताब्दी में महमूद गजनी ने उजाड़ दिया था उसके सेनापति सालार जंग ने इसे जीता था

मथुरा से लेकर भरतपुर और बयाना (श्रीपथ) पर्यन्त ही हमें हरे भरे खेत दिखाई दिए थे। बैर और हिण्डौन से लेकर सवाई–माधोपुर तक शुष्क मरूस्थलीय अनुर्वर भूमि ही थी। रात्रि को हमने लगभग 9–10 बजे रणथम्बौर के आस–पास पहुंचकर अपना रात्रिकालीन भोजन किया था। उसके पश्चात हम वातानुकूलित शयनयान में सो रहे थे। प्रातः काल जब पांच बजे के लगभग मेरी तन्द्रा टूटी थी तो हमें बड़ौदा स्टेशन के दर्शन अंधकार के झुटपुटे में हुए थे। रात्रि में शयन–काल में ही हम राजस्थान के काटा से लेकर मध्यप्रदेश के रतलाम से लेकर गुजरात के गोधरा जैसे स्टेशनों को पार कर चुके थे। बडौदा से हमें हरियाली की धुंधली चादर दिखाई देने लगी थी। सूरत के स्टेशन के आने तक भगवान भास्कर पूर्णतया उदित हो चुके थे। सूरत शहर दूर–दूर तक फैला हुआ है। वह गुजरात की एक प्रकार से औद्योगिक नगर मुम्बई ही है। क्योंकि वहां पर ही वस्त्र–उद्योग से लेकर हीरा–तराशी के वृहद् औद्योगिक नगर मुम्बई ही है। क्योंकि वहां पर ही वस्त्र–उद्योग से लेकर हीरा–तराशी के वृहद औद्योगिक परिसर अवस्थित है। यह प्रवासियों द्वारा आवासित आधुनिक नगर ही है। कभी पूर्तगालियों और अंग्रेजों ने यही पर अपनी सुरती (तम्बाकू) की कोठियां कायम की थी, उसी के कारण इस नगर का नामकरण भी होना संभव हैं। मराठों ने भी इसकी खुलकर लूट की थी।

सूरत से आगे विलमौरा और नवसारी अपेक्षाकृत छोटे रेलवे–स्टेशन थे। अन्त में आठ जुलाई को हम प्रातः काल लगभग 9 बजे वलसाड स्टेशन पर उतरे थे। वहीं हमको विलमौरा तक ले जाने के लिए श्री मोरे जी अपनी वैन लेकर आ गये थे। उनके साथ ही हम लगभग 8 बजे विलमौरा पहुंचे थे। वलसाड, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी भाई का गृहनगर है तो नवसारी जिला कभी पारसी आबादी बहुल था। श्रीमती इन्दिरा गांधी के पारसी (ईरानी आर्य) पति श्री फिरोजखान वहीं के मूल निवासी थ। वे पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ इलाहाबाद में वकालत करने के लिए ही यहाँ से गये थे। नवसारी शहर की मार्किट और पार्क बहुत ही सुन्दर है। बलसाड शहर भी खुला हुआ है। मार्ग में हमें सड़क के दोनों ओर हरियाली युक्त वनीकृत खेतों के ही दर्शन हुए थे। चीकू और आम के बड़े–बड़े बाग बलसाड से लेकर नवसारी से विलमौरा तक लगे हुए हैं। नर्सरी–रोड से ही होकर हम विलमौरा में श्रीमती विमलेश चौधरी के घर–द्वार पर पहुंचे थे। वे एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय की सेवानिवृत्त प्राचार्या भी हैं और हिन्दी विभाग की अध्यक्षा भी रही हैं।

वहीं पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर हमने स्नान किया था। तभी 9 से दस बजे के बीच उपमा जैसे गुजराती व्यंजन से नाश्ता किया था जोकि चावल के पुलाव जैसा हल्का–फुल्का खाद्य–पदार्थ था। वहीं जाकर गुजराती का दिव्य समाचार–पत्र भी मैंने पढ़ा था। जिसमें बिट्रिश और दुनिया की बड़ी जानकारियां देखी थी। फ्रांस में भारतवर्ष की 20 परिसम्पत्तियों के अपहरण अथवा अधिग्रहण का वृत्तान्त कष्टदायक ही था। 'राफेल' विमान की खरीद की अनियमितताओं के विरूद्ध वहां के न्यायालय में जाँच पहले से ही जारी है। अतः एव उपर्युक्त दोनों ही घटनाओं से भारत की साख को विदेशों में भी गहरा बट्टा लगा है।

दोपहर को एक से दो बजे तक भोजनोपरान्त हमने उस दिन पूर्णतया विश्राम किया था। दोपहर बाद जलपान पर बैठकर स्नेहपूर्ण वार्त्तालाप किया था। सायंकाल श्रीमती विमलेश चौधरी के विशाल भवन में भ्रमण किया था। मेरा सुपुत्र अभिनव भी अपनी मंगेतर डॉ० ईशानी के साथ शीघ्र ही घुलमिल गया था। वे दोनों ही सायंकाल बाजार में भ्रमण करने एवं आवश्यक भोजन–सामग्री खरीदने के लिए निकल गये थे। मैंने श्रीमति चौधरी के साथ शादी–संबंध के अतिरिक्त गुजराती साहित्यकारों के विषय में भी गंभीर चर्चा की थी। नरसी मेहता से लेकर प्रेमानन्द, जीवनानन्द, गोवर्धनराम त्रिपाठी, मर्नदाशंकर से लेकर उमाशंकर जोशी से लेकर वर्तमान के अम्बानाल पटेल और पन्नालाल पटेल से लेकर रघुबीर चौधरी तक के कृतित्व के विषय में वार्तालाप किया था। यह जानकर दुखद आश्चर्य भी हुआ था कि श्रीमती चौधरी जोसफ मेकवान और दया पंवार जैसे दलित रचनाकारों से पूर्णतया अपरिचित ही थीं।

अगले दिन 9 जुलाई को हम प्रातः काल दस बजे ही प्रातः राश करके हम भ्रमण के लिए मोरे साहब को साथ लेकर चारों–पांचों जने श्रीमती विमलेश चौधरी की बड़ी गाड़ी में बैठकर महात्मा गांधी जी की ऐतिहासिक दांडी–यात्रा के दर्शनार्थ निकले थे। मार्ग

में हरे–भरे गन्ने के खेत थे तो कहीं पर धान की पौध लहरा रही थी। सड़क के दोनों ओर सघन वृक्षावली थी। हरित–शाद्वल तृण–विरूिध और लता–वितान का हरा मखमली गलीचा–सा प्रकृति ने वहां पर बिखेरा हुआ था। बीच–बीच में फूलों की खेती या नर्सरी का दृश्य गलीचे में 'बेल–बूटों' का ही काम कर रहे थे। दांडी से पूर्व धरासना जैसा सागर–तट भी कौरोना के कारण प्रतिबन्धित था।

दांडी नामक गांव के आसपास खेतों में कोठीनुमा फार्म–हाऊस भी बने हुए थे। दांडी गांव में सर्वप्रथम 'सैफी हाऊस' या वह ऐतिहासिक झौंपड़ी देखी थी कि जहां पर साबरमती आश्रम से अपने 80 चुने हुए सत्याग्रहियों के साथ महात्मा गांधी जी आकर ठहरे थे। अब तो वहीं पर एक उस खपरैल युक्त शाला को वर्तमान में गुजरात सरकार ने एक संक्षिप्त संग्रहालय का ही स्वरूप दे दिया है। उससे आगे चलकर सागर तट की ओर अंग्रेजी व गुजराती एवं हिन्दी भाषा में एक स्मारक–शिलापट्ट भी अंकित थी। जहां पर कि माहत्मा जी ने स्वयं नमक उठाकर नमक निर्माण संबंधी बिट्रिश सरकार ने काले कानून का उल्लघंन किया था। अतएव विदेशी सरकार ने उनको गिरतार करके वापिस भेज दिया था। लेकिन महात्मा जी अपने भीषण व्रत के चलते साबरमती आश्रम अहमदाबाद में वापिस कहां गये थे। उन्होंने उस अवसर पर यही वज्रघोषाा की थी – "मैं कुते की और कौए की मौत मरने को तैयार हूँ, लेकिन बिना स्वराज लिए नहीं लौटुंगा।" तभी श्री जमनालाल बजाज ने वर्धा में उनके लिए सेवाग्राम की स्थापना की थी।

दांडी में कई शालाओं में चित्र–प्रर्दशनी लगी हुई है तो एक नमक के विशाल सरोवर के तट पर भित्तिचित्र दांडी–यात्राा के दृश्यों के अंकित हैं। लिनसे वह 1930 ईस्वी की परिघटना सामने साकार हो उठती है। एक विशाल एवं भव्य भवन में ऑडियो–विडियो दृश्य–भव्य र्काक्रम भी चित्रपट पर चल रहा था। मैं थककर वहीं पर बैठ रहा था, जबकि मेरे शेष सहयात्री उस विशाल नमकीन तालाब की परिक्रमा करते हुए विभिन्न दृश्यावलियों का आनन्द घूम–घूम कर लेते रहे थे। नवयुगल मेरा पुत्र एवं उसकी मंगेतर स्थान–स्थान पर सेल्फी लेकर उन मनोरम चित्रों को सहज रहे थे। वे तितलियों की भांति खिलखिला भी रहे थे।

चित्रपट पर जो गीत–संगीत एवं सम्भाषण का कार्यक्रम चल रहा था, उसमें महात्मा जी को दांडी–मार्च के कारण वैश्विक स्तर पर प्राप्त प्रतिद्धि का भी उचित उल्लेख किया जा रहा था सचित्र। थोड़े ही देर के बाद प्रचण्ड प्रचारक भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी स्वयं महात्मा जी के स्थान पर चरखा चलाने के लिए बैठे थे। इस स्मारक–स्थल के सद्घाटनकर्ता के रूप में उनके ही भीषण–भाषण एवं दृश्य उस चित्रपट पर बार–बार दर्शाये जा रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कि जैसे दांडी की यात्रा की बजाय महात्मा जी के मोदी जी ने ही की हो। उन्मुक्त आत्म–प्रदर्शन की यह ओछी और आत्मघाती तथा जनविरोधी प्रबल प्रवृत्ति ही है।

उस दिन सायंकाल हम पुनः सूरत नगर में नवसारी से होते हुए पहुंच गये थे। मनोहर मेघमाला निर्मल नभ में छाई हुई थी। सूरत नगर के पश्चिमी दक्षिणी छोर पर नव निर्मित वी.आई.पी. रोड पर नगर की परिक्रमा करते हुए पहुंचे थे। वहीं पर अब हीरा–मार्केट उठकर आ गई है। वहाँ की नवीन नगर–नियोजन दर्शनीय था। दूर–दूर स्थित कई–कई सोसाईटियां मार्केट उठकर आ गई है। चण्डीगढ़ शहर की भांति चौडी–चिकनी सर्पीली सड़के हैं। सायंकाल के समय मर्करी लाईंटें दीपशिक्षा की भांति झिलमिला रही थी। तभी हम वहाँ से निकले थे। नवसारी (पारसी बहुल नगर) मार्ग मध्य में पुनः आया था। वहां की संस्थाएं एवं सामुदायिक भवन तथा सुन्दर पार्क मनोहर हैं। गुजरात के प्रवासी लोग सर्वाधिक यहीं से विदेशों में गये हुए हैं। वैसे तो सारा ही दक्षिण गुजरात सुन्दर और सम्पन्न है। लेकिन सूरत और नवसारी नगर औद्योगिक और व्यापारिक दृष्टि से अग्रणी हैं।

बलसाड जिले में हम वहां की नर्सरियों और बनीकृत कृषि–फार्मों को देखने के लिए गये थे। वहीं से डांग और सहयाद्रि की पर्वत–श्रंखलाएं सुशोभित हो रही थी। स्थान–स्थान पर लोलियुक्त कृषि–फार्म बने हुए थे। जिनमें नकद बिक्री वाले फल और फूल उगाये जाते हैं। बीच–बीच में राजमार्ग के निकटवर्ती गांवों के छोटे–छोटे बाजार भी विकसित हो गये हैं। दक्षिण–गुजरात का बलसाड जिला महाराष्ट्र के ठाणे जिले से संलग्न हैं। वापसी उसका नया अर्न्तराष्ट्रीय औद्योगिक नगर बन गया है। जोकि मुम्बई के ही अत्यन्त सन्निकट है।

12 जुलाई 2021 की रात्रि को बलसाड से मैंने पुनः वही राजधानी ट्रेन पकड़ी थी। मेरी भावी समधिन एवं उसकी पुत्री और मेरा पुत्र अभिनव मुझे स्टेशन तक छोड़ने के लिए आये थे। क्योंकि बौलीमोरा और नवसारी जैसे अपेक्षाकृत लघुतम नगर के स्टेशनों पर द्रुतगति युक्त ट्रेनें रूकती ही कहां हैं। बलसाड नगरपालिका की नगर–नियोजन योजना भी दर्शनीय थी। स्थान पर चौड़े–चौड़े चौक और काफलोनियों के बीच में बड़े–बड़े हरे भरे पार्क बने हुए हैं। वहां का रेलवे स्टेशन भी काफी लम्बा–चौड़ा है। मोरारजी भाई (पूर्व प्रधानमंत्री) का गृहनगर होते हुए भी उनका चित्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होना मेरे लिए कष्टकारी ही था। भाजपा को अपने विरोधी दलों के नेताओं के साथ शत्रुओं के समान व्यवहार अब प्रत्यक्ष ही हैं। दक्षिणी गुजरात कोली पटेल बहुल ही हैं। दांडी के किसान पशुओं की यायावरी या आवारागर्दी से मुझे निराश और हताश ही मिले थे। क्योंकि उन्होंने उनकी सारी फसलें 'गोरक्षा–अभियान' के चलते उजाड़ दी थीं।

रेल–मार्ग में सहयात्रियों के साथ वार्तालाप–संलाप भी हो पाया था। एक–दो को छोड़कर उनमें से अधिकांशतया उग्र हिन्दुराष्ट्रवादी ही थे। एक युवक की नौकरी कोरोना–काल में चली गई थी तदपि वह सत्ता–प्रतिष्ठान का प्रखर पक्षधर ही था। दो गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी जोकि सूरत से ही सवार हुए थे, वे अब

धार्मिक या आध्यात्मिक की बजाय साम्प्रादायिक राष्ट्रवादी की बातचीत से लग रहे थे। मेरे कम्पार्टमैंट के सहयात्रियों में से कई व्यापारी और नौकरीपेशा लोग भी थे। लेकिन उनके लिए बेकारी और मंहगाई या अर्थव्यवस्था में आई गिरावट उतने बड़े चिन्ता के विषय नहीं थे। जितनी कि हिन्दु हितों की रक्षा थी। अतएव वे धारा 370 के अंवैधानिक रूपेण कृत उन्मूलन और राममदिंर के नवनिर्माण से ही परम प्रसन्न थे।

मैं यह देख और सुनकर हतप्रभ था कि मध्यम वर्ग का बौद्धिक दिवालियापन आजकल शिखर पर पहुंच गया है। जैसे धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद एवं जनतांत्रिकता अब उसकी चिन्ता और चेतना से दूर की वाहियात बाते ही हैं। उनके लिए अब धर्मनिरपेक्षता ही तुष्टिकरण हैं और तो और, वे सार्वजनिक संस्थाओं के घनघोर निजीकरण को ही वर्तमान में स्वालम्बन मानकर आत्मतुष्ट है? अब उसकी चिन्ता और चिन्तन की बजाय गरीबी और अमीरी के बीच में बढ़ती आकाश और पाताल जैसी गहराती खाईयां कहां है। कोरोना काल में अव्यवस्था या कुव्यस्था के कारण जो भी बदनामी भारत की अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर हुई है, उसकी चिन्ता अब शहरी और सवर्ण मध्यमवर्ग को कहां हैं।

सार्वजनिक संस्थाओं और न्यायालयों तक की निष्पक्षता में जो भीषण क्षरण अब हुआ है, उसकी चिन्ता भला किसे है। 97 प्रतिशत लोगों की आय में जो कमी आई है, वह भी अब चिन्ता का विषय कहां हैं। आयों में जो असमानता अनुदिन बढ़ रही है, उसको लेकर भी कोई किसी प्रकार की उद्वेलन या बैचेनी अब नागरिक समाज में क्यों नहीं है। ईंधन के तेल और खाद्य–पदार्थों की जो कीमत सुरसा के मुख के समान वर्धमान हैं उस पर अब कोई जन–आंदोलन अब मीडिया कहां दिखाता है। वे गौरांग साधु या सांड तो दिल्ली के दरवाजे पर महिनों से धरने पर बैठे हुए लाखों किसानों को भी दलाल ही बता रहे थे। जबकि वे परजीवी पेटपाल वर्ग के अनुत्पादक लोग स्वयं ही सदैव राजसत्ता के चिर चाकर रहे हैं। धर्मसत्ता, आखिर राजसत्ता के सहारे से ही तो फलती–फूलती है। मैं 12 जुलाई को मथुरा–जंक्शन पर उतरकर 8 बजे महाकौशल एक्सप्रैस पकडकर 10 बजे अपने घर पलवल में आ गया था।

कोरोना से बड़ा रोग दलबदल

– कमलेश भारतीय

पिछले दो साल से कोरोना का रोना हर कोई रो रहा है। क्या उद्योगपति, क्या मुम्बई फिल्मी दुनिया या फिर गरीब लोग सबसे सब कोरोना का रोना रोते हैं। क्या कोरोना से बड़ा कोई रोग है ? जी हां। है न अपना दलबदल रोग। कितनी बड़ी महामारी। कोरोना तो आता है और बीच बीच में चला भी जाता है लेकिन दलबदल ऐसा रोग है जो स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय राजनीति को घुण की तरह ऐसा लगा है कि लोकतंत्र की नींव हिलाकर रख दी है।

अभी पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव आ गये हैं। चुनाव आयोग ने तिथियां भी घोषित कर दी हैं पर इन चुनावों से पहले ही दलबदल आ चुका है। पहल तो हमेशा भाजपा ही करती है और पंजाब के दो दो विधायक पार्टी के पाले में ले आई है। लेकिन यह भी पहली बार हुआ है कि भाजपा को बड़ा झटका लगा है उत्तर प्रदेश में जब इनके मंत्री महोदय स्वामी केशव प्रसाद मौर्य ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और अखिलेश यादव के साथ फोटो शूट करवाने निकल पड़े यानी समाजवादी पार्टी की टोपी पहनने वाले हैं। इनके साथ तीन और विधायकों ने भी भाजपा का स्थ छोड़ दिया। स्वामी प्रसाद मौर्य बसपा विधायक दल के नेता पद से इस्तीफा देकर भाजपा में आए थे और अब मंत्रीपद छोड़कर सपा में जा रहे हैं। क्या मौर्य के इस दलबदल को भाजपा के संकट और आ रहे विधानसभा चुनाव का कोई संकेत माना जाये ? क्या मौर्य भी रामबिलास पासवान की तरह हवा का रुख पहचानने में माहिर हैं ? जहां जाते हैं, सत्ता वहीं होती है। अभी इनकी बेटी भाजपा की सांसद है।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष व महाराष्ट्र में शिवसेना व कांग्रेस के साथ गठबंधन करवाने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार ने और भी चौंकाने वाला खुलासा करते बताया कि अभी भाजपा के तेरह और विधायक समाजवादी पार्टी में शामिल होंगे। यह भाजपा की रणनीति को आइना दिखाने जैसी घटना कही जा सकती है। भाजपा ने ही सन् 2014 से केंद्र में सत्ता में आने के बाद दलबदल को बढ़ावा दिया और इसके सहारे राज्यों की सत्ता पर कब्जा कर नारा दिया–कांग्रेस मुक्त भारत। क्या अब भाजपा मुक्त उत्तर प्रदेश बनने जा रहा है ? क्या भाजपा को उत्तर प्रदेश में हार का सामना करना पड़ेगा? क्या राम मंदिर और काशी विश्वनाथ अपना आशीर्वाद नहीं देंगे ? एक सूचना है कि राम नाम के पटके का ऑर्डर अब दूसरे दल भी देने लगे हैं यानी भाजपा को भाजपा की नीति में ही मात देने की तैयारी में हैं दूसरे दल। शरद पवार जल्द ही लखनऊ आकर राज्य के छोटे दलों को समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन करवाने की कोशिश करेंगे। सपा के अध्यक्ष अखिलेश ने अपने चाचा शिवपाल सिंह से भी गठबंधन कर लिया और जयंत से भी। इस तरह शुरूआत हो चुकी। शरद पवार नये चाणक्य सिद्ध हो रहे हैं।

इन सबके बावजूद यह कहना चाहता हूं कि दलबदल चाहे भाजपा करवाये या फिर सपा या आप या कोई भी राजनीतिक दल यह एक बहुत बड़ा रोग है जिसे मिटाने को कोशिश कोई दल नहीं कर रहा बल्कि सब बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं और यह लोकतंत्र को खोखला किये जा रहा है। अभी ताजा ताजा चंडीगढ़ नगर निगम में सत्ता पाई भाजपा ने इसी अस्त्र के सहारे तो बताओ कौन इसे मिटाने की कोशिश करेगा ?

राजनीति है दलबदल रोगी

अरे कोई तो बचाओ३

कौन बदलेगा इस दलबदल की राजनीति को ?

चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव में एक बार फिर दलबदल से मेयर का पद भारतीय जनता पार्टी की सरबजीत कौर को मिल गया। मिल गयी चंडीगढ़ की सरदारी भाजपा को। बहुत बहुत बधाई पर सवाल यह उठते है कि इस दलबदल की राजनीति को बदलेगा कौन ?

चुनाव में आप सबसे बड़ी पार्टी बन कर आई और चुनाव के एकदम बाद ही दलबदल की राजनीति शुरू हो गयी जब कांग्रेस के भाजपा में शामिल हो गयीं हरप्रीत कौर बाबला। भाजपा की सांसद किरण खेर को भी एक छोटी सी राजनीति में अपना बड़ा योगदान देने यानी वोट देने आना पड़ा। एक वोट रद्द हो जाने से भाजपा की वैतरणी पार हो गयी। लोगों ने इस रद्द वोट पर कहा कि जैसे कभी जी न्यूज वाले मीडिया मुगल सुभाष चंद्रा भी एक रद्द वोट से राज्यसभा में पहुंचने में सफल रहे थे वैसे ही सरबजीत कौर भी एक रद्द वोट से सौभाग्यशाली रहीं और मेयर बन गयीं। एक साल के लिए। दूसरे डिप्टी मेयर के पद तो सचमुच भाग्य से ही मिले ड्रा में।

सवाल यह उठता है कि इस दलबदल की राजनीति पर कोई लगाम लगाने आगे आयेगा ? पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने दलबदल कानून बनाया जरूर लेकिन उसका तोड़ निकाला गया रद्द वोट और इस दलबदल की राजनीति को कोई रद्द न कर सका। कांग्रेस ने बहिष्कार किया क्योंकि पंजाब के विधानसभा चुनाव में कोई गलत संदेश न जाये। अकाली दल के एकमात्र पार्षद ने क्या किया यह पता नहीं चला।

चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव परिणाम को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पंजाब के लिए एक आइना बता कर खुश हो रहे थे तो आइना यह भी देख लें कि दलबदल की राजनीति से कैसे पार पाओगे? जश्न मनाने चंडीगढ़ पहुंचे थे लेकिन मेयर पद भाजपा ले गयी और आप देखते रह गये। चुने हुए प्रतिनिधियों को एकदम संभालने का खेल चल निकला है। यह गुजरात के राज्यसभा चुनाव से शुरू हुआ था और फिर राजस्थान में बड़े पैमाने नर खेला गया जब मानेसर में विधायकों को मेहमान नहीं बंधक बना कर रखा गया। अब यह खेल छोटे स्तर पर भी पहुंच गया है। जिला पार्षद के अध्यक्ष जैसे छोटे चुनावों में भी पार्षदों को हिल स्टेशन की सैर करने की ऑफर मिल जाती है। सारे जन्म जन्म के पास धुल जाते हैं एक ही बार में। अगली बार कौन चुनाव लड़े एक ही चुनाव में सारे मज़े ले लो यही राजनीति है। अभी तो पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव का बिगुल बजा है, कोई कह रहा है कि शंखनाद हुआ है। नहीं यह शंखनाद दलबदल की राजनीति का हुआ है। आप के सांसद भगवत मान ने बिकने या पद के प्रलोभन से इंकार कर दिया लेकिन भाजपा ने अपनी रणनीति नहीं बदली। उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर, कर्णाटक, असम और कहां कहां यह रणनीति नहीं चली ? इस दलबदल की राजनीति को कौन रद्द करेगा ? ये वोट रद्द नहीं हो रहे बल्कि आम आदमी का विश्वास डगमगाने लगा है। आज बाबला कांग्रेस से चुन कर आती हैं और कल दूसरी पार्टी का दामन थाम लेती हैं, क्यों ? इस राजनीति से आम आदमी को कितनी ठेस पहुंची है और इसीलिए वह मतदान के लिए समय खराब नहीं करता। मतदान का प्रतिशत इसीलिए कम होता जा रहा है। क्या फायदा मतदान का ? जिसे मतदान दिया उसने अपना मत ही बदल लिया ? क्यों? पढ़े लिखे चुने हुए प्रतिनिधि का वोट कैसे रद्द हो जाता है? क्या है इसके पीछे का रहस्य? लोकतंत्र को बिकाऊ न बनाइए। इससे आमजन का भरोसा उठता जायेगा चुनावों से।

ताबड़तोड़ रैलियां और पैसे की गर्मी

पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव आने वाले हैं। सबसे ज्यादा जोर लगा है सभी प्रमुख दलों का उत्तर प्रदेश राज्य पर क्योंकि यह एक बड़ा प्रदेश है इसे जीतने का मतलब लोकसभा चुनाव की जीत की राह आसान बनाना है। जहां कांग्रेस प्रियंका गांधी के सहारे इस वितरण को पार करना चाहती है, वहीं भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह की सलामी जोड़ी पर निर्भर कर रही है। यह सबसे हिट जोड़ी इस बार भी रैलियों की शुरूआत कर चुकी है, इसलिए क्रिकेट की भाषा में सलामी जोड़ी कहा है। यही नहीं ये दूसरे दलों के नेताओं पर कटाक्ष का काम यानी चौके छक्के लगाना भी शुरू कर चुकी है। जैसे समाजवादी पार्टी की लाल टोपी को खूनी टोपी कहना और अब इत्र बैठने वाले व्यापारी को लेकर स्पा पर दुर्गंध फैलाने का काम करने वाली पार्टी कहना। यह खेल फर्रूखावादी अभी शुरू हुआ है। कहां तक चलेगा? कह नहीं सकते। कहां पहुंचेगा ? कुछ पता नहीं।

उत्तर प्रदेश में भाजपा की रैलियों को लेकर बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने टिप्पणी की है कि ये रैलियां चुनाव से पहले जो रैलियां की जा रही हैं ये जनता के पैसे और सरकारी कर्मचारियों की भीड़ के बलबूते की जा रही हैं। उन्होने यह भी कहा कि बसपा की कार्यशैली और चुनाव को लेकर तौर तरीके अलग हैं। हमारी पार्टी गरीबों और मजलूमों की पार्टी है, दूसरी पार्टियों की तरह धन्ना सेठों की पार्टी नहीं है। याद रहे कि भाजपा के अभाव शाह ने मुरादाबाद, अलीगढ़ और उन्नाव में जनविश्वास यात्रा के दौरान बसपा पर हमले करते कहा था कि बसपा प्रमुख बहन मायावती जी तो ठंड के कारण मैदान में उतर ही नहीं रहीं। चुनाव आ गया है और वे प्रचार के लिए भी नहीं निकल रहीं। उन्होंने यहां तक कहा कि लगता है कि पहले ही हार मान ली। इसी के जवाब में मायावती ने मीडिया में आकर कहा कि भाजपा और कांग्रेस जैसी पार्टियां केंद्र या जिन भी राज्यों में सत्ता में होती हैं, चुनाव घोषित होते ही लगातार दो अढ़ाई महीने पहले ही ताबड़तोड़ रैलियां कर हवा हवाई घोषणाएं, शिलान्यास, उद्घाटन और लोकार्पण जैसे कार्यक्रम चलाती हैं। इनकी आड़ में सरकारी खर्च से खूब चुनावी जनसभाएं करती हैं। ये आम जनता का पैसा पानी की तरह बहाती हैं।आधी भीड़ तो टिकट चाहने वालों की होती है और आधी सरकारी कर्मचारियों की। अब

जो ठंड में भी गर्मी चढ़ी हुई है यह सरकार के रईसों के खजाने की ही गर्मी है।

जो भी हो मायावती ने समय अनुसार जवाब तो सही दिया है लेकिन क्या वे जनता से धन इकट्ठा नहीं करती रहीं ? खासतौर से अपने जनाभदिन के बहाने दिल्ली में बड़ा बड़ा समारोह करके और टिकट बांटने के नाम पर पैसे बटोरने के आरोप सबसे ज्यादा इन पर ही नेता लगाते रहे हैं।

सभी पार्टियां अपनी अपनी विचारधारा और विकास की बात करने की बजाय बड़ी बड़ी रैलियों पर विश्वास करने लगी हैं। विकास या मुद्दे की बातें पीछे रह जाती हैं और इस तरह के आरोप प्रत्यारोपों में ही चुनाव निकल जाता है। या फिर जातिवाद का सहारा लिया जाता है। अब हरियाणा में भी रैलियों का चलन बहुत बढ़ता जा रहा है। कभी अपनी पार्टी के स्थापना दिवसों पर रैलियां तो कभी विपक्ष आपके द्वार के नाम पर रैलियां। कभी खर्ची पर्ची के विरोध में रैली तो कभी देशभक्ति को लेकर बढ़ चढ़ कर रैली। नये से नये मुद्दे पर रैली और होर्डिंग्स लग कर शहरों की दीवारों को पोतने की कोशिश। हमारा प्यार हिसार ने कितना अभियान चलाया कि होर्डिंग्स लगा कर या लिखवा कर शहर की दीवारों को न भर डालिए लेकिन ये समर्थक हैं कि मानते ही नहीं, सुनते भी नहीं। शहर फिर होर्डिंग्स से भरा पड़ा है। ऐसे ही पंजाब में मुख्यमंत्री चन्नी और आप नेता अरविंद केजरीवाल के पोस्टरों से दीवारें और पोल भरे पड़े हैं। उत्तर प्रदेश की योगी जी जाने पर विज्ञापनों पर भी बेतहाशा खर्च किया जा रहा है। फिर चाहे वे योगी जी हों या फिर केजरीवाल। आजकल तो चन्नी के पूरे पन्नों के विज्ञापन भी ध्यान आकर्षित करने लगे हैं। प्रचार कैसे किया जाये ? जनता के धन को कैसे बचाया जाये, इसे लेकर कोई बहस या विचार या मंथन होना चाहिए।

चलो कोई नयी शुरूआत करें३

पंजाब में कांग्रेस की बारात और दूल्हा कौन ?

पंजाब विधानसभा चुनाव आने तक इसके अध्यक्ष, क्रिकेटर और कॉमेडी शोज के जज नवजोत सिद्धू क्या क्या नहीं कहेंगे, ये तो वे भी नहीं जानते लेकिन इतना तय है कि नये नये झमेले में पार्टी को खुद ही फंसाते रहेंगे। नशाखोरी पर पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरेंद्र सिंह तक को घेरते रहे और ऐसा चक्र चलाया कि उनकी छुट्टी करवा कर ही दम लिया। फिर भी नये बने मुख्यमंत्री चन्नी से भी खुश नहीं हुए और एक बार तो अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे डाला था लेकिन कांग्रेस हाईकमान ने इस दुलारे को अध्यक्ष बनाये रखा। यह बहुत महंगा पड़ने वाला फैसला बनने जा रहा है।

सिद्धू को मुख्यमंत्री बनने की बहुत उतावली है और वे कांग्रेस हाईकमान से पूछ रहे हैं कि विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस की बारात का दूल्हा कौन होगा ? जनता को बताया जाना चाहिए। विधानसभा चुनाव से पहले कौन मुख्यमंत्री का चेहरा होगा यह बताया जाये। यह बात एक टी वी चौनल में बातचीत के दौरान उठाई है।

दूसरी ओर पंजाब प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी पहले ही कह चुके हैं कि चुनाव में कांग्रेस कभी किसी को पहले से ही मुख्यमंत्री का चेहरा नहीं बनाती। यह कांग्रेस की परंपरा नहीं है लेकिन सिद्धू हैं कि अपनी ही पार्टी को मुसीबत में डालने पर तुले हैं। जहां कांग्रेस के दो नेता पार्टी छोड़ कर भाजपा में जा मिले, अध्यक्ष महोदय को इस बात की फिक्र नहीं और अन्य विधायकों से मिल कर उन्हें पार्टी में बनाये रखने की चिंता नहीं, बस चेहरा बनने की जल्दी है। जब विधायक जीत कर आयेंगे तभी तो बारात बनेगी सिद्धू जी और फिर विधायक अपना नेता यानी दूल्हा भी चुन लेंगे। क्या आपको हाईकमान पर विश्वास नहीं ? आखिर अपनी ही पार्टी को संकटों में फंसाना कब छोड़ोगे? यह कोई कॉमेडी शो नहीं है सिद्धू जी जिसमें आप कोई बात कहें और हाईकमान ताली ठोक दे। गुरु यह राजनीति है और इसमें थोड़ी गंभीरता और सब्र से काम लो न कि उतावलेपन होते रहो। जानते हो न कि ज्यादा उतावलापन काम बिगाड़ भी सकता है। उत्तराखंड में भी हरीश रावत की देखरेख में चुनाव लड़े जायेंगे लेकिन उन्हें मुख्यमंत्री का चेहरा नहीं बनाया जा रहा। वे भी कद्दावर नेता हैं और मुख्यमंत्री रह चुके हैं फिर भी चेहरा नही बनाये जायेंगे। फिर आपको इतनी जल्दी किस बात की? गुरु थोड़ा इंतजार का मजा लीजिए।

Neta Ji Subhash Chandra Bose
(The Stormy Petrel of Freedom Struggle)

- R.N. MALIK

The period of 42 years (1905-47) of freedom struggle constitutes the most glorious period of India history. This is because the leaders of the Freedom Movement struggled hard and then succeeded in casting away the veil of slavery of 13 centuries on 15th August 1947. King Harsh Vardhan had died in 647 A.D. Since then, India had remained under the subjugation of different dynasties, kingdoms and empires till 1947. The leaders who spearheaded this movement were extraordinary human beings. Their hardwork, honesty, simplicity, sacrifices, confinement in jails, trial and tribulations, knowledge and sublime thoughts matched those of angels. They too made mistakes because the situations they faced from time to time were very complex. But looking at the present crop of leaders, it becomes hard to believe that such great leaders once lived in India.

Five persons formed the top grade of leadership of the Freedom Movement. They were

Lokmanya Tilak, Mahatma Gandhi, Sardar Patel, Jawaharlal Lal Nehru and Subhash Chandra Bose. Bose was the youngest of them all. Gopal Krishan Gokhale, Lala Lajpat Rai, Annie Besant, C.R.Das, Motilal Nehru, Rajendra Prasad, Abdul Kalam Azad, Dr. M.A.Ansari, Hakim Azmal Khan and Acharya Kriplani constituted the second tyre. Lokmanya Tilak (1856--1920) laid the foundation of the Freedom Movement and Mahatma Gandhi (1869--1948) built the superstructure. Subhash (1897--1945) died at the young age of 48 years but he created waves of his adventurous activities during the short span of his political engagement of 27 years.

Subhash was a rebel even during his college days and his father Janki Nath Bose and elder brother Sarat Bose were greatly worried about his future inspite of his great academic performance in the university exams. So he was sent to England to sit for the ICS examination. He had only eight months at his disposal to achieve this milestone while other students were preparing there for the last 18 months to clear this prestigious examination. Subhash passed this examination with flying colours and stood fourth in the merit list of successful candidates. He topped in the English paper along withAnother student of Bengal. But patriotism and super nationalism ticked his conscience not to serve the interests of the British government to perpetuate her rule in India by working as her agent in the government job. Accordingly, he resigned the coveted service and returned to India on and met Gandhi Ji in Bombay. Gandhi Ji had launched the famous Non co-operation Movement and it was in its peak form at that time. Gandhi Ji advised Subhash to meet Deshbandhu Chita Ranjan Das who was the in charge of the movement in Bengal. C.R.Das was a brilliant lawyer and topmost leader of Congress in Calcutta and had a legal practice of Rs 50000 per month in those days. He left his practice at the call of Gandhi Ji and took over the reins of the Non-cooperation movement. Subhash met C.R.Das and Adopted him as his Guru and adopted his wife Basanti Devi as his second mother.

Subhash's baptism with jail life came in October 1921 when he led a procession in Calcutta protesting the visit of Prince of Wales. He was sentenced an imprisonment of six months. "Have I stolen a chicken", remarked Subhash commenting on the short span of the imprisonment. Going to jail for the cause of achieving freedom was considered as an Auspicious Act in those days. So the entire family celebrated the first journey of Subhash to the jail. CR Das too had been arrested and both Subhash and his Guru came out of jain in August 1922 after Gandhi Ji had withdrawn his Non-cooperation movement.

Elections the Municipal Corporations were held in 1924. Congress party won the elections with athumping majority and all the top leaders were elected as chairman of the Corporations in big cities--- Nehru in Allahbad, Sardar Patel in Ahmedabad, Prasad in Patna and C.R.Das in Calcutta. Das appointed Subhash as the Chief Executive Officer (CEO) of the Calcutta Municipal Corporation. Sarat Bose was elected as the Alderman. Subhash and C.R.Dass worked Assiduously to improve the lot of the people of the city. They provided reservation to the poor Muslims in Class-3 and Class-4 posts. This action greatly strengthened the bond of Hindu-Muslim unity and Gandhi Ji showered lot of praise for both of them.

British Government quickly sensed that Subhash was one person who could make people of India to rise as one man onAny day to fight against the Raj because of his lung power and dynamic personalty. He could also make both Indian police and the military to cause mutiny. Britishers could rule India for two hundred years because of the unflinching loyalty of Indian police, military and princes.Therefore he was selected for special harsh treatment and his name was registered in the hit list of the Bengal government and the authorities kept a vigilant eye on his activities and remained on the look out to arrest him on any plausible pretext. The Government knew that Subhash was doing wonderful work for the people of Calcutta and becoming extremely popular figure there. He could easily rebuke the British officials working in the Corporation for their negligence of duty.

One fine evening on 25th October 1924, police came to his house and arrested him under section 3 of the 1818 Act and kept him in acell at night in Lal Bazar police station. Subhash could not sleep at night because the cell was infested with bugs and mosquitoes. Subhash called this one night stay as the hell on earth. He was produced in the court and sent to the Alipore jail. This Act related to the terrorist and revolutionary activities of a person and the

Government could keep him in jail for indefinite period. The frivolous and concocted charge against Subhash was that he was in contact with terrorist and revolutionary groups of Bengal. After keeping him in jail for three months, he was shifted to the Mandalay jail on 25th January 1925. Manday Jail was an unhygienic place. The damp climate also did not suit him. A T.B. patient was residing in the adjoining cell. So Subhash contracted tuberculosis in his lungs and started losing weight. He was shifted to Rangoon jail for treatment of his disease. There too, he did not recover. Finally government released him on 11th May 1927 after keeping him in Burmese jails for 28 months.

Subhash was given a hero's welcome in Calcutta on his arrival. He instantly became a national hero and icon for the young generation of India. He became President of Bengal Congress Committee. He was also made the General Secretary of Congress in the 1927 Congress session in Madras. It was a rare honour bestowed upon a young Congress worker. He was only 30 years old at that time. To cap it all, he was made a member of the Motilal Nehru Committee to draft the Indian Constitution to be submitted to the British government to grant Dominion status to India.

C.R.Das died in June 1925 due to heart attack. It was a rude shock to Subhash. Now there was no guru to guide him in the minefield of politics. His elder brother Sarat Bose had become a renowned lawyer of Calcutta by now and had a roaring legal practice of Rs 50000 per month. But he preferred to perform the role of an indulgent elder brother and allowed Subhash to take his own independent decisions in his political journey. Youth organisations started inviting Subhash to address them with his fine oratory. The instant greatness went his head. C.R.Das was not there to control his exuberance. Motilal Nehru report had suggested grant of dominion status to the people of India. But Jawaharlal and Subhash plainly told Motilal Nehru that they would oppose the resolution for approval of the report in the open session of Congress to be held in December 1928 at Calcutta. At the instance of Gandhi Ji, Motilal Nehru was asked to preside over the session. Both Jawaharlal and Subhash moved a counter resolution to oppose the proposal of granting Dominion status and asked the House to replace the proposal with complete independence. Finally Gandhi Ji reached a compromise asking to give one year grace period to the Viceroy Lord Irvin to grant Dominion status to India failing which Congress would launch the nonviolent Non-cooperation movement to fight for complete independence. One noteworthy distraction of the Congress session was that Subhash appeared in the dress of a military general along with his workers. There was no need to do so as wearing Khadi clothes was the creed of the Congress party. The senior leaders did not like this Amateurish display of Subhash. Also Gandhi Ji and Sardar Patel felt that Subhash did not have full faith in Gandhian philosophy of nonviolence. One does not know if the one year ultimatum was sent to the Viceroy (Lord Irwin) and the British Government in LONDON. Accordingly, there was no meeting between the Congress and the government on the issue of granting Dominion status till December 1929 and the resolution remained hollow as expected.

Congress session for the year 1929 was held on the banks of river Ravi near the Lahore city. Jawaharlal was asked to preside over the session. He was only 40 years old and the youngest President so far. In his address, Jawaharlal said that age of petitionsAnd prayers was over and time had come to fight for complete independence. The Atmosphere in the session was full of enthusiasm and new found super nationalism. The Congress flag was unfurled to declare its resolve for attaining independence.

A meeting was held to chalk out a program to Attain Purna Swaraj or complete independence. Sardar Patel suggested a Bardoli type Satyagraha to withhold the payment of land revenue to the government. Dr. Ansari suggested to take out a large procession and give a memorandum to the Viceroy. Subhash suggested to form a Parallel Government within India. Jawaharlal, the President, and mover of the Purna Swaraj resolution kept quiet. Suggestion of Sardar Patel was the best and the wisest but it involved great hardships to be born by the farmers like the farmers of Bardoli Taluka in Gujrat during the 1928 Bardoli Satyagraha. Suggestion of Subhash was most impractical. Gandhi Ji advised them to leave the type of Satyagraha to be launched to him. Subhash had taken out a funeral procession in Calcutta on the occasion of the death of Jatin Das who died after undergoing a hunger strike for 64 days in Amritsar jail. The strike was to protest against the supply of

poor quality of food to the prisoners by the jail staff. A case had been registered against Subhash for treating the procession as an unlawful activity in September 1929. The case was decided on 23rd January 1930; the 33rd birthday of Subhash and the judge announced a sentence of one year imprisonment. Subhash was arrested and sent to jail. The High Court, reduced the sentence by three months. Gandhi Ji had asked the senior members of the Congress to Ascertain the views of the people and ask them to assemble on 26th January and take an oath drafted by him. So big meetings were organised at the provincial levels on that day and 26th January was declared as the Independence day for India and the workers were asked to celebrate this day every year. Subhash had been jails three days earlier and consequently could not take part. In the proceedings on 26th January. On a day in April, the jail guards were beating some prisoners mercilessly with lathis and Subhash tried to intervene. The guards attacked Subhash in the same vein and Subhash became unconscious due to the lathi blows. No first Aid was given to him. All this was done at the instance of senior officers and to break the spirit of Subhash. All the guards were Indians and they knew Subhash very well.

Gandhi Ji started the Salt Satyagraha on 12th March 1930 as part of attaining Purna Swaraj program and launched the Dandi March. The Movement caught momentum instantly. Large crowds of people proceeded to the coastal areas to break the salt law by collecting salt at the sea coasts from the salt deposits. Gandhi Ji took 20 days to reach village Dandi located on the sea coast. He had to walk 240 miles on foot to break the Salt Law. A group of Satyagrahis led by Sarojini Naidu were beaten and kicked mercilessly by the police with lathis. All the policemen were Indians. Two persons died on the spot and and 328 were injured seriously. They did not move from their places and only used their h ands to avoid the lathi blows on heads and kept on chanting Inqlab Zindabad. An American journalist prepared the film of this tear jerking scene and sent the report to New york. The publication of this report created furore the world over but the British government did not feel Ashamed. One lac people were arrested and sent to different jails.

Subhash could not take part in this Movement as he was already in jail. He was released in September after completing his jail term. He had won the election of Mayor of Calcutta Corporation from the jail itself. Accordingly, he took the charge and engaged himself laboriously in different projets of the Corporation. 26th January 1931 was the first year of the deemed independence of India. Congress had taken the decision to celebrate this day every year. Therefore Subhash led a procession in Calcutta on this day. The police came across his way and started raining lathi blows on Subhash in cold blood. An employee of the Corporation fell upon his body to protect him against the direct lathi blow on his head. Subhash was arrested and produced in the court next day in blood soaked clothes. No First-Aid was given. The judge sentenced him without trial. He was released on 23rd March when other political prisoners of Salt Satyagraha were released under the Gandhi-Irvin pact.

Congress launched another Non-cooperation movement when Gandhi Ji and Sardar Patel were arrested by the Government from Bombay on 4th January 1932. Gandhi Ji had just arrived from England after Attending the second round table Conference. Farmers of U.P. had launched a Satyagraha against the imposition of high rates of land revenue. Subhash too was arrested on 4th January and lodged in a Ramshackle jail in Seoni in M.P. His brother Sarat Bose too was arrested in February and lodged in the same jail along with his younger brother. Sarat Bose was a diabatic patient and Subhash started developing his old problem of lung infection. Accordingly both the brothers were shifted to the Jabalpur jail. The lung infection of Subhash could not be cured. He was then shifted to Madras and finally to Lucknow jail. His condition continued to deteriorate continuously and was reaching the critical stage.The government agreed to release him on the condition that he would be straightaway sent to Europe for the treatment of his lung infection and return back with the permission of the government. The family agreed to comply with this condition and sent Subhash to Vienna; the capital of Austria. Subhash was taken to the Bombay Airport in an Ambulance and released only after the entry into the ship and was not allowed to meet even the members of his family. Subhash reached Vienna on 26th February 1933 and got admitted in a hospital and he quickly started recovering from the disease. He remained in Vienna for three years and visited many European countries including Irel and to

champion the cause of Indian freedom. He returned to India on 8th April 1936. He was arrested at the Bombay port itself and lodged in Yerawada Jail Pune. Jawaharlal made lot of noise against the arbitrary arrest of Subhash. Finally, on 21st May, the government agreed to intern him at the residence of his brother at Kurseong near Darjeeling. He lived there for seven months and shifted to Medical College Calcutta after he developed Allergic problems due to change of season. He was finally released from the hospital on 17th March 1937.

(to be continued)

हरनाज सिंधु की देश का मान बढ़ाने वाली उपलब्धि

– डॉ मोनिका शर्मा

मिस यूनिवर्स–2021 का खिताब अपने नाम करने वाली हरनाज कौर संधू सुंदर चेहरा भर नहीं है। देश का प्रतिनिधित्व करने वाली एक बेटी है। वैश्विक स्तर पर आयोजित एक प्रतियोगिता में अपने मन में संजोए सपनों को पूरा करने और देश का मान बढ़ाने वाली बेटी। हरनाज ने कहा भी है कि 21 साल बाद इस गौरवशाली ताज को भारत लाना गर्व का क्षण है। यकीनन, ऊर्जा और आत्मविश्वास से भरी एक बेटी की यह उपलब्धि देश के हर नागरिक के लिए गर्व करने की बात है। दरअसल फैशन, मॉडलिंग, खेल या व्यवसाय। क्षेत्र कोई भी हो, उपलब्धि की मुस्कुराहटों से सजी जीत एक भारतीय की जीत होती है। फिर चाहे ग्लैमर की दुनिया से जुड़ी प्रतियोगिता में विजेता बनने के बाद सिर पर सजा ताज हो या तकनीक और खेल के संसार में मिली पहचान। हर जीत अपने देश के आंगन में मिली समझ, सहयोग और मार्गदर्शन का संदेश लिए होती है।ये संदेश हमारे देश की मिट्टी और हमारे पारिवारिक संस्कारों की ही देन हैं। गौरतलब है कि अभिनेत्री और मॉडल हरनाज ने 79 देशों की प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतिभागियों में जगह बनाने के बाद दक्षिण अफ्रीका की ललेला मसवाने और पराग्वे की नादिया फ़रेरा को पीछे छोड़ते हुए यह खिताब जीता है।

इजराइल के इलियट में आयोजित 70वीं मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में भारत की हरनाज ने यह जीत देश के नाम की है। मुस्कुराते चेहरे और सहज और सधे हुए व्यक्तित्व ने इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में 21 साल बाद हमारे देश को जीत दिलाई है। हरनाज से पहले दो भारतीय महिलाओं ने मिस यूनिवर्स का ताज हासिल किया है। इससे पहले अभिनेत्री सुष्मिता सेन और लारा दत्ता ने यह ताज पहनकर देश का मान बढ़ाया था। गौरतलब है कि साल 2000 में भारत की लारा दत्ता और 1994 में सुष्मिता सेन ने मिस यूनिवर्स का ताज देश एक नाम किया था। विचारणीय है ऐसी प्रतियोगिताओं में जीत दर्ज करने वाले चेहरे एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व के तौर पर देखे जाते हैं। यही वजह है कि उनसे पूछे गए सवालों के जवाबों से लेकर उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि तक सब कुछ चर्चा का विषय बन जाता है। विशेषकर युवाओं की सोच को उनके विचार और व्यक्तित्व से जुड़ी बातें खूब प्रभावित करती हैं। इस साल मिस यूनिवर्स के ख़िताब पर क़ब्ज़ा जमाने वाली 21 वर्षीय हरनाज द्वारा दिए गए एक सवाल के जबाव को लेकर भी खूब चर्चा हो रही है।

दरअसल प्रतियोगिता के आखिरी चरण में सभी प्रतिभागियों से पूछा गया था कि, आज के समय में दबाव का सामना कर रही उन युवा महिलाओं को वो क्या सलाह देना चाहेंगी जिससे वो उसका सामना कर सकें?श इस प्रश्न के लोगों का मन जीतने और गहरे मायने लिए जवाब ने उनकी जीत पक्की की। हरनाज ने पूरे आत्मविश्वास से कहा कि श्आज के युवा के सामने सबसे बड़ा दबाव खुद पर यक़ीन करने को लेकर है, यह जानना कि आप सबसे अलग हैं आपको खूबसूरत बनाता है। ख़ुद की लोगों से तुलना करना बंद करें। उन चीज़ों के बारे में बात करें जो दुनिया में हो रही हैं, और ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। खुद के लिए आवाज उठाइए क्योंकि आप स्वयं ही अपने जीवन के नेतृत्वकर्ता हैं, आप ही आपकी आवाज़ हैं। मैंने ख़ुद पर यक़ीन किया और आज यहां खड़ी हूं।श हरनाज ने उत्तर में औरों से तुलना की सोच से दूर रहते हुए अपना मनोबल बनाए रखने और मुखर होकर अपनी बात कहने की पैरवी की। युवाओं के लिए अपने आप में यकीन रखने को जरूरी बताया। यहां पर यह कहना गलत नहीं होगा कि आज के दौर में यह अपने सपने साधने और तरक्की की राह पर आगे बढ़ने का मूल मन्त्र है।

देखने में भी आ रहा है कि हमारे यहां हर क्षेत्र से जुड़ी महिलाएं अब मुखर होकर अपनी बात रख रही हैं। नतीजतन आये दिन देश की बेटियों की उपलब्धियां हमारे सामने आती रहती हैं। कम उम्र में शादी के विरोध से लेकर उच्च शिक्षा जारी रखने के लिए आवाज़ उठाने और मतदान के लिए घर से निकलने से लेकर आर्थिक आत्मनिर्भरता के मोर्चे तक। महिलाएं पूरे आत्मविश्वास से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। इतना ही नहीं आज के दौर की महिलाएं अपने परिवेश की बदलती परिस्थितियों, अधिकारों और कर्तव्यों को लेकर भी जागरूक हैं। सुखद है कि यह ताज हासिल करने के बाद सोशल मीडिया से लेकर आम जीवन तक चर्चा में आए भारत की इस बेटी के इन विचारों की पहुंच देश के कोने–कोने में बसी महिलाओं तक

पहुंचेगी। मुखरता और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के विषय में चर्चा भी अवश्य ही होगी।

आज दुनिया की सबसे ज्यादा युवा आबादी भारत में बसती है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में जीत दर्ज करके वैश्विक पटल पर चमक रहे इस चेहरे की बातें युवाओं के लिए भी प्रेरणादायी हैं। दूसरों से तुलना करने के बजाय सजग हो खुद के लिए आवाज़ उठाने की बात देश के युवाओं के लिए बेहतरी का मन्त्र सा है। यह एक कटु सच है कि आज के दौर में सोशल मीडिया अपडेट्स से लेकर आम जिन्दगी की चमक दमक तक, तुलना करने की सोच ने युवाओं को तनाव और अवसाद का शिकार बना रखा है। किसी से पीछे छूट जाने की आभासी उलझनों ने घेर रखा है। इतना ही नहीं जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चिंताओं के प्रति गम्भीरता की कमी से जुड़े सवाल के जवाब में भी हरनाज ने मौजूदा हालात को बातें कम और काम ज्यादा करने वाली परिस्थितियां मानते हुए कहा कि हमारा हर एक काम प्र.ति को या तो बचा सकता है या नष्ट कर सकता है। रोकथाम और सुरक्षा करना, पछताने और मरम्मत करने से बेहतर है।श प्र.ति को सहेजने से जुड़े व्यावहारिक विचार रखने वाले भारतीय चेहरे ने अपनी कामयाबी का श्रेय अपने परिवार को दिया है। विचारणीय है कि मुखरता, सफलता और होड़ की दौड़ में शामिल होने के बजाय स्वयं को संवारने–साधने से जुड़ी ऐसी बातें आज के युवाओं के लिए चिन्तन का विषय हैं। खासकर देश की बेटियों को आत्मविश्वास से भरने और अपने सपने साधने का सन्देश देती हैं। आज के प्रतियोगी समाज में असल जरूरत खुद को बेहतर बनाने की है। सुखद यह भी है कि ऐसे भाव भविष्य में हर क्षेत्र से जुड़े युवाओं में आगे बढ़ने और सार्थक उपलब्धियां देश के नाम करने की ऊर्जा भरने वाले हैं।

तिरंगा

– अंकुर सिंह

तिरंगा है हमारी जान, कहलाता देश की शान।
तीन रंगों से बना तिरंगा, बढ़ता हम सब की मान।।
केसरिया रंग साहस देता, श्वेत रंग शांति दिखलाता।
हरा रंग विकास को बता, तिरंगा बहुत कुछ बताता।।
तिरंगे मध्य में अशोक चक्र, निरंतर हमें बढ़ने को कहता।
राजपथ और लाल किले पर, तिरंगा देश की शान बढ़ाता।।
तिरंगा है देश की पहचान, रखेंगे हम सब इसका मान।
तिरंगे की रक्षा के ख़ातिर, कर देंगे अपने प्राण क़ुर्बान।।
आओ आज हमसब मिलकर, जन गण मन राष्ट्र गान गाएं।।
जाति–धर्म का भेद मिटाकर, अपने देश का हम मान बढ़ाएं।।

कहानी कर्ण की

– Mandeep Judge

पांडवो को तुम रखो, मै कौरवो की भीड से
तिलक शिकस्त के बीच में जो टूटे ना वो रीढ़ मै
सूरज का अंश हो के फिर भी हुँ अछूत मै
आर्यव्रत को जीत ले ऐसा हुँ सूत पूत मै
कुंती पुत्र हुँ मगर न हुँ उसी को प्रिय मै
इंद्र मांगे भीख जिससे ऐसा हुँ क्षत्रिय मै
आओ मैं बताऊँ महाभारत के सारे पात्र ये
भोले की सारी लीला थी किशन के हाथ सूत्र थे
बलशाली बताया जिसे सारे राजपुत्र थे
काबिल दिखाया बस लोगो को ऊँची गोत्र के
सोने को पिघला कर डाला सोन तेरे कंठ में
नीची जाती हो के किया वेद का पठंतु ने
यही था गुनाह तेरा, तु सारथी का अंश था
तो क्यो छिपे मेरे पीछे, मै भी उसी का वंश था
ऊँच नीच की ये जड़ वो अहंकारी द्रोण था
वीरो की उसकी सूची में, अर्जुन के सिवा कौन था
माना था माधव को वीर, तो क्यो डरा एकलव्य से
माँग के अंगूठा क्यों जताया पार्थ भव्य है
रथ पे सजाया जिसने कृष्ण हनुमान को
योद्धाओ के युद्ध में लडाया भगवान को
नन्दलाल तेरी ढाल पीछे अंजनेय थे
नीयती कठोर थी जो दोनो वंदनीय थे
ऊँचे–ऊँचे लोगो में मै ठहरा छोटी जात का
खुद से ही अंजान मै ना घर का ना घाट का
सोने सा था तन मेरा, अभेद्य मेरा अंग था
कर्ण का कुंडल चमका लाल नीले रंग का
इतिहास साक्ष्य है योद्धा मै निपूण था
बस एक मजबूरी थी, मैं वचनो का शौकीन था
अगर ना दिया होता वचन,वो मैने कुंती माता को
पांडवो के खून से,मै धोता अपने हाथ को
साम दाम दंड भेद सूत्र मेरे नाम का
गंगा माँ का लाडला मै खामखां बदनाम था
कौरवो से हो के भी कोई कर्ण को ना भूलेगा
जाना जिसने मेरा दुख वो कर्ण कर्ण बोलेगा
भास्कर पिता मेरे, हर किरण मेरा स्वर्ण है
वर्ण में अशोक मै, तु तो खाली पर्ण है
कुरुक्षेत्र की उस मिट्टी में,मेरा भी लहू जीर्ण है
देख छानके उस मिट्टी को कण कण में कर्ण है

चौधरी चरण सिंह : नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित

– प्रो० डॉ० दुर्गपाल सिंह सोलंकी

चौ चरण सिंह के पिताजी छोटे से किसान परिवार से थे और तीन गाँव में इनके पिताजी का जीवन यापन चला। आखिरी गाँव भदोला थाना व ब्लाक भौजपुर मोदीनगर के पास है। यही इनकी थोड़ी बहुत ज़मीन थी। जो चौ चरण सिंह जी के समय ही नहीं रही थी।

इसका हवाला ये है जब चौ चरण सिंह अंतिम समय में बीमार हुवे और इस दुनिया से विदा हुवे तब उनके पास केवल बैंक में 24 हज़ार रुपए थे, जिनमें से 20 हज़ार बीमारी में खर्च हो गए थे, चार हज़ार बैंक में थे। और कोई मकान या प्लाट और खेती की भूमि उनके नाम नहीं थी।

इसलिए ही मै धन, पद, यश की भूख में पागलाय लोगों से ख़ुशवंत जी के शब्द अकसर लिखता और कहता हूँ कि.

करो ऐसा कि लिखें लोग,
लिखों ऐसा कि पढ़ें लोग।

आम मनुष्य/परिवार/समाज अपने को आम से ख़ास (धन, पद, यश) की श्रेणी में जाने की लालसा में नैतिक पतन के रास्ते को या अपनी लगन, महनत से उस विषय/कार्य का विशेषज्ञ बन पहले से बेहतर या उच्च श्रेणी कर प्राप्त तो कर लेता है।

लेकिन उस सफलता में अहंकार, निष्ठुरता का आचरण अपना कर दूसरों को तुच्छ समझ उपेक्षा, उपहास करने से पाई बेहतरी को मोहर लगाने को गर्व समझता है।

जबकि सच्चाई ये है कि उसकी सफलता की जो प्रशंसा उसे व्यक्ति/परिवार/समाज देता है। धीरे धीरे वह अशोभनीय आचरण से खोने लगता है।

उसे मालूम ही नहीं होता कि जिस रुतबे के प्रभाव में लोग आपके आचरण को बरदास्त करतें हैं।

उन्हें अपना समय व्यतीत करना या उल्लू सीधा करना है। तभी वे चाकरी भी करतें है और अपमान भी सहन करते है।

इस मानसिकता से प्राप्त सफलताओं को मालूम ही नहीं होता कि आपको मिली उपलब्धियों को दरबारी चाटुकारों के घेरे ने गौण कर रखा है।

इस घेरे के कारण जो अशोभनीयता पर नाराज़गी करते है। वे दुश्मन से लगते है।

इसलिए हम सबको चौ चरण सिंह, चौ छोटू राम जी, डॉ० अम्बेडकर आदि जैसे अनेकों को पढ़ना नहीं समझना भी चाहिए कि उनके जाने के बाद भी विरोधी और समर्थक उनके व्यक्तित्व को अपने लाभ में इस्तेमाल क्यों कर रहें है।

इसके उलट धन, पद और यश की लालसा वाले गुम नाम क्यों है या उनको जाति, धर्म के नाम पर जब सार्वजनिक रूप से याद और सम्मान देने का प्रयास करतें है।तो जनता क्यों आक्रोशित हो उठती है?

चौधरी चरण सिंह देश के किसान कामगारों के मसीहा थे। वे पिछड़े दलित शोषित अल्पसंख्यक तथा सर्वहारा के रहनुमा थे। उनमें देशभक्ति एवं लोक कल्याण की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे भारत माता के ऐसे महान सपूत थे जिन्होंने राष्ट्र हित में बड़े से बड़ा त्याग करने में जरा भी विलम्ब नहीं किया। इस्तीफा तो हर समय उनकी जेब में रखा रहता था। विशुद्ध, गांधीवादी, आदर्श प्रिय, यथार्थवादी तथा प्रखर व्यक्तित्व के धनी चौधरी चरण सिंह ने महात्मा गान्धी की नीतियों एवं कई कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने का प्रयास किया। वे प्रतिभा सम्पन्न ऐसे जीवन्त क्रान्तिदर्शी राजनीतिज्ञ थे जो अपनी दूरदर्शिता, दृढ़निश्चयता और ईमानदारी के लिए देश के इतिहास में सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। सत्य भाषण और स्पष्टवादिता उनके चरित्र का बल था जिसके कारण उन्हें लौह पुरूष कहना सर्वथा उचित है। उनसे मतभेद रखने वाला व्यक्ति भी यह स्वीकार करता है कि वह एक निडर और ईमानदार लोक नेता थे। भ्रष्टाचार को प्रशासन और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खत्म करना उनके जीवन का लक्ष्य था। सादा जीवन, उच्च विचार, उज्ज्वल चरित्र उनकी विशेषतायें थी। सामाजिक शोषण और उत्पीड़न के वे कट्टर विरोधी थे। उनकी आर्थिक नीतियों और मान्यताओं का मूल किसानों, कमजोर वर्गों, पिछड़े और अनुसूचित जातियों का कल्याण व उनकी आर्थिक दशा को ऊंचा उठाना था जिससे भारत प्रगति कर सके। अतः वह कृषि मूलक आर्थिक नीतियों के समर्थक थे किन्तु औद्योगिक एवं सर्वतोमुखी विकास में भी उनका उतना ही विश्वास था।

हिन्दुस्तान की राजनीति में जो लोग नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहे उनमें चौधरी चरण सिंह का नाम पहली पंक्ति में आता है। जहां मूल्यों और अनुशासन की बात आती थी वे वज्र से कठोर थे वहीं मानवीय दर्द के प्रति वह कुसम से कोमल थे। गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी रामकृष्ण परमहंस और महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा रहबरे आजम दीनबंधु सर चौधरी छोटूराम और महान क्रान्तिकारी एवं भारत की प्रथम अस्थायी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति राजा महेन्द्र प्रताप के नैतिक मूल्यों की छाया में उनके असाधारण व्यक्तित्व का विकास हुआ था।

चौधरी चरण सिंह के विचारानुसार भारत की गरीबी का कारण गांव और खेती की निरन्तर उपेक्षा है उनके मत में देश की तरक्की का रास्ता खेतों की पगडंडी, बागों और खलिहानों तथा गांवों की गलियों से निकलता है शहर के महलों

से नहीं। जब तक गांवों का विकास नहीं होगा हिन्दुस्तान उन्नति के पथ पर नहीं बढ़ सकेगा। चौधरी साहब ने कुटीर और ग्रामीण लघु उद्योगों के विस्तार पर जोर देते हुए प्राकृतिक संसाधनों को स्वदेशी तकनीक से उपयोग के लिए आहवान किया। वे मशीनीकरण के विरोधी नहीं थे लेकिन उनकी मान्यता थी कि जो कार्य हाथें से हो उसके लिए मशीनों का प्रयोग नहीं किया जायें। इससे बेरोजगारों को काम मिलेगा।

चौधरी चरण सिंह के शब्दों में, 'भ्रष्टाचार आज अपनी चरम सीमा पर भयानक रूप धारण कर चुका है। कोई ही जन नेता होगा जो ईमानदारी से काम कर रहा होगा। सर्वत्र उपर से नीचे भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हमारी राजनीतिक व्यवस्था में 25 ईमानदार लोग तैनात कर दिए जाये तो पांच वर्ष में भ्रष्टाचार को दूर किया जा सकता है।' इन पंक्तियों के लेखक का चौधरी साहब से भारतीय क्रान्ति दल की स्थापना इन्दौर मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय अधिवेशन नवम्बर 1967 के समय से घनिष्ठ रूप से राजनीतिक एवं कार्यक्रमों में सक्रियता से रहा हैं। अपने एक पत्र में उन्होंने लेखक को लिखा था। आज जो भी लोग राजनीति के क्षेत्र में आते है वे विधायक बनना चाहते है और विधायक बनते ही उनके मन के अन्दर मंत्री पद की लालसा पैदा हो जाती है। किसी के सामने कोई आदर्श नहीं है। सभी राजनीतिक पार्टियों का यही हाल है। कितना सटीक कथन है। चौधरी चरण ने राजनीति और प्रशासन में पनपे जातिवाद के विरोध में एक पत्र लिखकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को सुझाव दिया था कि अन्तर्जातीय विवाह करने वाले युवकों को राजपत्रित पदों पर नियुक्त किया जाये लेकिन उनके विचारों को सही रूप में नहीं लिया गया। नेहरू जी चुप्पी साध गये।

चौधरी चरण सिंह आधुनिक भारत के निर्माता व जननायक थे। वर्तमान सरकारें यदि उनकी नीतियों का अनुसरण करें तो देश की तस्वीर बदल जायेगी। आज गरीबी की आवाज उठाने वाले अनेक नेता हैं जो उनके नाम पर राजनीति कर रहे हैं लेकिन वे केवल भाषणों द्वारा ही जनता के प्रति कोरी हमदर्दी का प्रदर्शन करने के सिवाय व्यवहारिक रूप में शून्य हैं। चौधरी चरण सिंह के प्रति सरकार, राजनीतिक विचारकों व समाज सेवी संस्थाओं का उपेक्षापूर्ण रवैया और उदासीनता के कारण उनके जीवन चरित्र एवं दर्शन का पूर्ण रूप से मूल्यांकन अभी तक सम्भव नहीं हुआ है। इस महान विभूति का चरित्र बहुत उच्च स्तर का था। महान व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना असम्भव है। उसका तो केवल एहसास ही किया जा सकता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा कहते है कि चौधरी चरण सिंह जी की जो बात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती थी वह यह कि वे हमारे देश की जमीन से जुडे हुए थे। उन्हें इस देश की अस्मिता की गहरी पहचान थी। भारतीय किसानों के लिए चौधरी साहब ने जो कुछ भी किया वह ऐतिहासिक महत्व का है। मैं उन्हें देश से जुड़ा नेता मानता हूँ। पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का कहना है कि चौधरी चरण सिंह का जीवन उनका देशभक्ति का जज्बा उनकी ईमानदारी एक मिसाल है। हमें उनकी खूबियों से प्रेरणा लेनी है। वह बहुत साफ दिल इन्सान थे। उनकी जिन्दगी हमारे लिए उदाहरण है। हमें गर्व है कि ऐसे महापुरूष ने इस जमीन पर जन्म लिया। ऐसे महापुरूष के बताए रास्ते पर चलने का हम संकल्प लें। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत के शब्दों में चौधरी चरण सिंह ने कौमी मुक्ति संघर्ष और किसानों को जागरूक करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चौधरी चरण सिंह का नाम उनके कार्यों के कारण अमर रहेगा और उनके विचार किसानों की हमेशा रहनुमाई करते रहेंगे। पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लिखा है कि चौधरी चरण सिंह से सम्पर्क का मौका एक बार अमेरिका में उनकी बिमारी के दौरान मिला था जिसमें उन्होंने कहा था कि इस देश का क्या होगा। इसके बाद उनकी आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। उनके इस एक ही वाक्य में पीढ़ी की पूरी वेदना पूरा दर्द छिपा था। इसलिए मेरा कहना है कि देश के गरीब मेहनतकश किसान मजदूर के लिए जो टीस चौधरी साहब के मन में थी यदि उसे हमने सही मायनों में नहीं पहचाना तो उनकी आशाएं पूरी नहीं होगी। मुझे आशा और विश्वास है कि उन्होंने जो रास्ता हमें दिखाया है उस पर चलकर हम उनके सपनों का एक नया भारत बनायेंगे।

युवा तुर्क रहे एवं हिन्दुस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर का मानना है कि चौधरी चरण सिंह की जब हम बात करते है तो हम उस मंत्र को याद करते है जो गाँधी जी ने दिया था और जिसे चौधरी साहब ने अपने में उतारा था। भारत के विकास का पथ भारत के गांवों खेत और खलियानों से होकर गुजरता है। जब चौधरी साहब किसान की बात करते थे तो किसान एक प्रतीक था। वह प्रतीक था बेबसी का शोषण का वह प्रतीक था उस दमन का जिस दमन के सहारे आज का समाज चल रहा है। एक नया समाज बनाने का सवाल नहीं है एक नया जीवन दर्शन है। एक नई जिन्दगी जीने का तरीका है जिस जिन्दगी में मेहनत करने वाला अपनी मेहनत का प्रतिफल पायेगा।

जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी समाज को बदलने के लिये संघर्ष किया उन लोगों में अगली कतार में चौधरी चरण सिंह थे। आशा है कि न केवल हम उनकी जिन्दगी के सुनहरे हिस्सों को देखेंगे न केवल याद करेंगे कि वह प्रधानमंत्री थे वह कभी मुख्यमंत्री और भारत सरकार के गृह

और वित्त मंत्री भी बने थे बल्कि यह याद करेंगे कि यह वह व्यक्ति था जो एक गरीब गांव की गलियों में किसान की झोंपड़ी से निकल कर आजादी की लड़ाई के दौर से निरन्तर संघर्ष करता रहा। दुख है कि चौधरी चरण सिंह अपनी जिन्दगी में अपने सपनों का भारत नहीं देख सकें। हमें इस दिशा में दो कदम आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय होना है तभी नया हिन्दुस्तान बन सकेगा। भारत के उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी के शब्दों में चौधरी चरण सिंह की स्पष्टवादिता, ईमानदारी, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की जो छाप है वह राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले हर कार्यकर्ता के लिए दीपस्तम्भ है। देश की राजनीति में खास कर अर्थनीति को दिशा देने में चौधरी साहब का बड़ा योगदान है।

चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी पूर्व विधायक व सांसद माता श्रीमती गायत्री देवी अपने पति के महान व्यक्तित्व को बहुत पसंद करती थी। उन्हीं के शब्दों में चौधरी साहब की एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है जो एक बार सही समझकर मन में ठान लेते हैं, उस पर अड़ जाते है उससे हटते नहीं चाहें लाख कोई कहे। यद्यपि लोग इसी कारण इन्हें जिद्दी भी कहते है लेकिन मैं समझती हूँ जो सख्त नहीं होगा वह अच्छा शासक नहीं हो सकता।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार कहा था कि चौधरी चरण सिंह को हम ग्रामीण भारत का प्रतिनिधि प्रवक्ता जीती जागती तस्वीर कह सकते हैं। भाव में भाषा में वेशभूषा में भोजन में चौधरी साहब वास्तविक भारत की तस्वीर पेश करते है। प्रख्यात इतिहासविद एवं अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज मधोक की चौधरी चरण सिंह के साथ मिलकर सन् 1974 में भारतीय लोक दल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वे भारतीय लोक दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी थे। प्रोफेसर मधोक के विचार में चौधरी चरण सिंह हिन्दुस्तान के बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी राजनेता थे। उनका महान व्यक्तित्व था। वे किसान कामगारों के हित चिन्तक थे।

वास्तव में चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचार थे एक आन्दोलन थे एक ऐसा समर्पित जीवन थे जिसके अन्दर गांव और हिन्दुस्तान का दर्द छिपा हुआ था। वे आम आदमी की खुशहाली के समर्थक थे। वे प्रत्येक भारतीय के लिए भोजन, वस्त्र, मकान के साथ–साथ स्वास्थ्य और शिक्षा की उचित व्यवस्था चाहते थे। चौधरी चरण सिंह आज हमारे बीच नहीं है लेकिन हमारे पास उनके विचार हैं। हमें उनके बताए रास्ते पर चलना होगा तभी उनके सपनों का नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब हो सकेगे।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 15.5.1994, 5'4" MBBS. Pursuing MD Anesthesiology, PGI Rohtak. Preference MD. MS Cinical. Avoid Gotra: Panu, Gill, Dhull. Cont.: 9416865888
- SM4 Jat Girl 26/5'1" NET in Commerce, B.Ed, Pursuing PhD. from M.D.U. Rohtak. Working as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Father in Haryana Government. Mother housewife. Preferred match in Government job. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Gehlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Girl (DOB 22.05.91)30/5'3" B.Tech, M.Tech,(Mechanical Engineering) from GJU Hisar, M.Tech. Gold Medalist. Pursuing P.hd. In Thermal Engineering from NIT Kurukshetra since 2017. Father in Government job. Mother Govt. Teacher. Avoid Gotras:Sandhu, Siwach, Gill, Sheoran (Direct).Cont.: 9813366793
- SM4 Jat Girl (DOB 26.02.86)35/5'5" BCA, GNIIT, OCP (Oracle Certified).Working as Lead Consultant-Technology Delivery in Virtusa Consulting Service Private Limited at Banglore with Rs. 18-20 Lac PA. Father Senior Class-I officer in Centre Government. Mother housewife. Elder brother settled in USA. Avoid Gotras: Tomar, Punia. Cont.: 9899951722, 9654646288
- SM4 convent educated Jat Girl (DOB 1995) 26/5'2" B. Tech. from PEC Chandigarh. Working in MNC. Avoid Gotras:Jaglan, Rathi. Cont.: 9417133975, 7889278091
- SM4 Jat Girl (DOB 27.05.94)27/5'5" LLB, LLM from Punjab University. Advocate in practice. Preparing for judiciary exam. Father DGM in Haryana and Admin in Ambala. Preferred professional and Govt. job. Avoid Gotras: Nain, Bheron, Mor. Cont.: 9996606868
- SM4 Jat Girl (DOB 04.12.90) 31/5'2" MCA., Working in MNC Mohali. Avoid Gotras: Gulia, Malhan, Dalal. Cont.: 9780385939
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95)26/5'2" MSc. (Math), B.Ed. Father retired Superintendent in Haryana Government. Family settled at Panchkula. Preferred tri-city based family. Avoid Gotras: Beniwal, Dhillon, Nehra. Cont.: 9466442048, 7888544632
- SM4 Jat Girl (DOB 09.11.94)27/5'4" MSc.(Math). B.Ed. Avoid Gotras:Kaliraman, Pawar, Jani. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 10.09.94)27/5'4" JBT, B.A., M.A. (Political Science), Doing M.A. (Hindi)., HTET, CTET cleared. Avoid Gotras: Dahiya, Antil, Atri. Cont.: 9416824157, 9013440500
- SM4 Jat Girl (DOB 12.03.92) 29/5'7" B. Tech, M.Tech, CSC. Processing M.A. Own coaching centre at Sector 19, Panchkula. Avoid Gotras: Kajla, Sangwan, Chhikara. Cont.: 9891351685, 9671153757
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl 27/5'3" Pursuing P.hd. Linguistics from D. U., IILTES 9.5. Avoid Gotras: Kadyan, Mor, Bhicher. Cont.: 8168666817.
- SM4 Jat Girl (DOB 05.10.90) 30/5'3" MDS (Endodontics). Working as Endodonist in Dental Academy and Hospital Chandigarh with package of Rs. 8 lakh PA. Father Professor, MDU, Rohtak. Mother Professor Jat College, Rohtak. Avoid Gotras: Chhilar, Virwal, Solanki. Cont.: 8199023624, 9416277507. E.mail: chhillar02@gmail.com
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B. Tech (CS). Working as Deputy Manager in WNS at Gurugram with Rs. 20 lakh package PA. Father working in AFT Chandigarh. Mother housewife. Brother army officer. Avoid Gotras: Goyat, Khatri, Nain. Cont.: 8427737450, 7988624647
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.90) 31/5'2" Master in Pharmacy. Employed as teacher in Diploma College. Father retired from HES-II, Mother housewife.

Avoid Gotras: Goyat, Dhankhar, Balhara, Kadyan. Cont.: 9996956282

- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 29/5'4" B.Tech (Electrical & Communication). Working as Contact Engineer in Bel company. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl 25/5'5" CSE from P.U. Chandigarh. Employed as P.O. in BOI. Avoid Gotras: Ahlawat, Lohchab, Balhara, Rathi not direct. Preference Tri-city based family and at least equal status. Cont.: 9417378133
- SM4 Jat Girl (DOB 25.01. 97) 24/5'6" M.Sc. (Chemistry) B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Sheoran, Sohlat, Thakan. Cont.: 9888518198
- SM4 Jat Girl 29/5'4". B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 05.11.97)24/6 feet. B.Tech. (Mechanical). Employed as Clerk in Chandigarh Administration on regular basis. Father in Haryana Government. Mother housewife. Preferred Govt./Private job in tri-city. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Nayotne, Badhrain, Panjeta.Cont.: 9467412702.
- SM4 convent educated Jat Boy 30/6'1". Employed as officer in Government job in Australia and own house in Australia. Father and Mother retired class-II officers from Haryana Government. Family settled at Yamuna Nagar. Avoid Gotras: Sheoran, Chahal, Dhanda. Cont.: 9518680167, 9416036007.
- SM4 Jat Boy (DOB 03.05.94)27/5'11". B.Tech from IIT Roorkee. Employed as officer in Government PSU with package of Rs.16 LPA. Father in Government service. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Redhu, Siwach. Cont.: 9888396275
- SM4 Jat Boy (DOB12.07.91) 30/6'2". B.Tech. Working in MNC at I.T. Park Chandigarh with package of Rs. 6 LPA. Father retired DGM from HMT Pinjore. Mother employed in Forest Department Haryana as Forest Officer. Family settled in own house at Panchkula. Residential plots at Panchkula and commercial sites at Air Port road, Mohali. Preferred match with Government job/MNC/Bank. Avoid Gotras: Malik, Ruhil, Nain. Cont.: 9467473796
- SM4 Jat Boy (DOB14.12.95) 26/5'9". B.Tech. (Mechanical). Pursuing LLB. Working as Design Engineer Training (GET) in MNC. Father Gazetted Officer in Haryana Government. Family settled in own house at Faridabad. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Malik, Kundu. Cont.: 9810365467
- SM4 Jat Boy (DOB 03.06.95) 26/5'9" Medical 10+2, D-Pharmacy, LLB, Doing practice at Hisar. Father in Haryana Government. Mother housewife. Avoid Gotras:Beniwal, Kundu, Sheoran. Cont.: 9416355407.
- SM4 Jat Boy (DOB15.08.93)28/6'2" Employed in Government job at Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Avoid Gotras:Punia, Mann, Sheoran, Phor. Cont.: 9466217701
- SM4 Jat Boy (DOB 01.03.93) 28/6'1" B.A., LLB, LLM Working as Legal Consultant in Law Firm at Chandigarh with Rs. 30000 PM. Father Class-I officer retired. Mother housewife. Family residence at Panchkula and Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia. Cont.: 9876155702
- SM4 Jat Boy 28/5'7" B. Tech (ECE). Working in MNC Chandigarh as Software Engineer with package of Rs. 9.50 lakh PA. Father retired gazette officer. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Dhariwal, Punia, Khatkar. Cont.: 9356041518
- SM4 Divorced Jat Boy having one daughter, (DOB 09.08.85) 36/6 feet. Plus two passed. Agriculturist. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanaghas. Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (DOB 01.02.94) 27/6'2" Employed as Assistant in Indian Post Department at Panchkula. Avoid Gotras: Mann, Gehlayan, Chhikara. Cont.: 9416276670
- SM4 Jat Boy (DOB (13.04.87) 34/6'2" M.A. Public Administration, LLB from CLC Delhi University. Advocate, Practicing in Delhi. Father Additional Chief Secretary retired from Govt. of India. Mother Lecturer retired from Haryana Government. Elder brother married and working as Manager in Indian Overseas Bank. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Sangwan. Cont.: 9417496903, 9023187793
- SM4 Jat Boy (05.01.93) 28/5'8" B.Tech (Mechanical). Working as group- C employee in Govt. of India, Department of Central Water Commission at National Water Academy, Pune. Father Haryana Government employee. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaliraman, Panghal, Punia. Cont.: 9992394448
- SM4 Jat Boy (20.04.91) 30/5'8" B.Tech (Computer Science). Own business, with Sparrow GG Solutions_OPC Pvt. Limited. Income Rs. 6 lakh PA. Mother Assistant in Haryana government. Avoid Gotras: Kadyan, Ahlawat, Dagar. Cont.: 9876855880
- SM4 Jat Boy 30/5'8" B.Tech from Kurukshetra University. Working in MNC Company at Banglore with Rs. 26 lakh package PA. Avoid Gotras: Malik, Khatri, Dahiya. Cont.: 9463491567
- SM4 Jat Boy (DOB 22.10.92) 29/5'11" B.Tech (Electronics & Communication) Working in H.S.S.C. on contract basis. Father retired Under Secretary. Family settled in own house at Panchkula. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Duhan, Hooda. Cont.: 9417347896
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.93) 28/6'2" Bachelor of Arts with Math and Economics from P. U. Chandigarh. Passed two Post graduate diplomas in Event Management & Global Hospitality Management from Canadian College. Avoid Gotras: Phougat, Dahiya, Rathi. Cont.: 9915484396
- SM4 Jat Boy (DOB18.10.90) 29/6'1" B.Tech from P.U. Chandigarh. Working as Inspector in CBI. Father retired as Under Secretary. Preferred working match in Central Government. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179, 7837551914
- SM4 Jat Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, GITOT Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Cont.: 9416152842
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lakh PA. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras:Jatyan, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.
- Suitable March for Jat Boy 28/6'1" B. Tech. Mechanical. Employed in SSWL Limited. with package of Rs. 470000/- PA. Own house at Tri-city. Avoid Gotras: Nehra, Kadiyan, Dhull, Malik. Cont.: 9876602035
- SM4 Jat Boy (DOB 14.12.95) 25/5'9" B. Tech (Mechanical). Pursuing LLB. Working as Design Engineer Training (GET) in MNC. Father gazetted officer in Haryana Government. Own house at Faridabad. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Malik, Kundu. Cont.: 9810365467
- SM4 Jat Boy 32/5'7" B.A, Business Footwear, Settled at Zirkpur own house. Avoid Gotras: Kharb, Narwal, Ravish. Cont.: 7508128129
- SM4 Jat Boy 30/5'11" BA. Business Footwear, One year Diploma in Computer, Manglik, Settled at Zirkpur own house. Avoid Gotras: Kharb, Narwal, Ravish. Cont.: 7508128129
- SM4 Jat Boy (DOB 06.01.91) 30/5'8" B.Tech. in Auto Mobile Engineering. Master from University of South Florida F.L. (U.S.A.) Worked in California as Business Analyst. Now working in Gurugram as Business Analyst. Father Deputy Excise and Taxation Commissioner in Haryana government. Mother housewife. Avoid Gotras: Sheoran, Sehrawat, Kharb. Cont.: 7217602068
- SM4 Jat Boy (DOB Oct. 99) 32/5'9" B. Tech. (NIT) Working as 1st Engineer in Cadence Americy Company Pune with package Rs. 16 lakh PA. Avoid Gotras: Gehlawat, Sangwan, Phogat. Cont.: 9466709254
- SM4 divorcee issueless Jat Boy (DOB 87) 34/6 feet Own business. Ten acre agriculture land, earning Rs. 12 lakh PA. Widow acceptable. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanghus. Cont.: 8837619762
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.94) 27/6'3" B.Teh (Mechanical) and Auto Cat Mechanical. Settled in Canada. Father in Haryana Government service and mother Government Teacher. Avoid Gotras: Shyan, Punia, Duhan. Cont.: 9417303470, 9416877531

हमें जिन पर गर्व है

दैनिक भास्कर

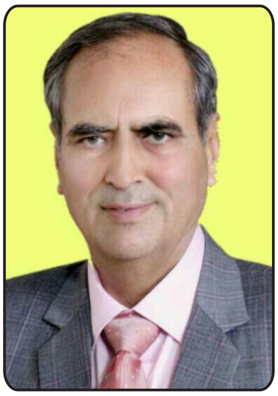

To

Shri. M.S Malik Ji
Retired D.G.P
Haryana Police.

Respected Sir

Dainik Bhaskar, a leading newspaper of country, has organised **"Police Pride Awards -2021"** to recognise the efforts of officials of Police Department & recognised them by giving honour at an event organised at PWD Rest House, Sector -1, Panchkula on 6^{th} January 2022. In the series of events happening across Haryana, this was the 5^{th} event, wherein we have honoured families of 2 officials who have lost their lives in the Covid pandemic while on service along with 25 other officers of Panchkula Police.

It was a special moment to extend our gratitude to those policemen/women by who are doing their duty and serving the humanity with a sense of absolute pride, celebrating the success stories of brave stalwarts of Haryana Police, who have immensely contributed to the force with esteemed passion, courage & valour while serving with Pride. Even during the most difficult times humanity has ever faced in pandemic, Police officials have served selflessly served the society providing basic amenities; which by & large has changed the imagery of police & made a positive shift in the minds of residents towards Police.

Since, your services are remarkable in the history of Panchkula Police, we feel immense proud in extending this small Token of respect to you for all your services towards the humanity.

Warm Regards

Kewal Sahni

Chief Operating Officer- North
Dainik Bhaskar Group

+91 96461 00086

दैनिक भास्कर दिव्य भास्कर दिव्य मराठी MY FM दैनिक भास्कर दिव्य भास्कर

India's Largest Newspaper Group | 12 States | 65 Editions | 3 Languages

Regd. Office: DB Corp. Ltd., Plot No. 280, Sarkhej-Gandhinagar Highway, Near YMCA Club, Makarba, Ahmedabad (Gujarat)
Unit Address: Plot No- 11-12, Sector -25 D, Chandigarh-160014 - Tel: 0172-3988884 - Fax: 0172-2709967 - CIN Number: L22210GJ1995PLC047208

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और शीघ्र ही निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड-एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह—सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2—बी, सैक्टर 27—ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172—2654932 2641127**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर—6, पंचकूला

फोन : 0172—2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172—2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2—बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27—ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।